हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार, 13 जुलाई 2025

11 सावन में अपनी महक बिखेर रहा घेवर

12 झज्जर के लड़के और गुरुग्राम की लड़कियां जीती

खबर संक्षेप

बामड़ोली में टायर फटने से ड्राइवर की मौत

बहादुरगढ़। गांव बामड़ोली में एक स्टॉक पर हादसा हो गया। यहां गाड़ी का टायर फट गया। इस दौरान गाड़ी का ड्राइवर चपेट में आ गया। हादसे में उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शनिवार को पोस्टमार्टम करा दिया। मृतक की पहचान करीब 53 वर्षीय चंद्रपाल के रूप में हुई है। उत्तर प्रदेश का रहने वाला था। बहादुरगढ़ के गांव बामड़ोली स्थित एक स्टॉक पर गाड़ी चलाता था। जानकारी के अनुसार, शुक्रवार की शम को वह गाड़ी लेकर यहां आया था। गाड़ी का टायर बदला जा रहा था। अचानक टायर फट गया और वह चपेट में आ गया। उसे गंभीर चोट आई। अस्पताल में लेकर गए तो उसे मृत घोषित कर दिया गया। सूचना पाकर लाइनपार थाने से पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस ने घटना को संयोग मानकर कार्रवाई की है। चंद्रपाल चार बच्चों का पिता था।

गांजे सहित दो युवक गिरफ्तार, केस दर्ज

झज्जर। पुलिस की दो अलग-अलग टीमों द्वारा अलग-अलग स्थानों से नशीला पदार्थ गांजा सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। प्रवक्ता ने बताया कि एंटीनारकोटिक सेल टीम को गुप्त सूचना मिली थी कि सोनू निवासी सुभाष नगर झज्जर नशीला पदार्थ गांजा बेचने का काम करता है। जो नशीला पदार्थ बेचने की फिराक में झज्जर गुरुग्राम रोड नजदीक शिव मंदिर के पास खड़ा हुआ है। जिस पर कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम मौके पर पहुंची और शक की बिनाह पर एक व्यक्ति को पकड़ा। पकड़े गए व्यक्ति की नियमानुसार तलाशी लेने पर उसके कब्जे से 236 ग्राम नशीला पदार्थ गांजा बरामद हुआ। वहीं थाना बेरी की पुलिस टीम को गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए मनीष निवासी मदाना खुर्द को 120.50 ग्राम गांजा सहित पकड़ा गया। पकड़े गए दोनों आरोपियों के खिलाफ कार्यवाई करते हुए संबंधित थानों में मामला दर्ज करते हुए नियमानुसार आगामी कार्यवाई अमल में लाई जा रही है।

नए बने थे फ्लाईओवर रुक नहीं रही मरम्मत

नया गांव चौक और बालौर चौक पर बने फ्लाईओवरों की गुणवत्ता पर उठ रहे सवाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

दिल्ली-रोहतक राष्ट्रीय राजमार्ग पर बहादुरगढ़ के नया गांव चौक और बालौर चौक पर एक साल पहले बने फ्लाईओवरों की गुणवत्ता को लेकर सवाल उठ रहे हैं। दोनों पुलों में बंप के साथ ही रोड़ी उखड़ने से हादसे की आशंका बनी रहती है।

> ■ दोनों पुलों में बंप के साथ ही रोड़ी उखड़ने से हादसे की आशंका बनी रहती है

बीते एक साल में कई बार पुलों पर आवामगन रोककर मरम्मत की जा चुकी है, लेकिन फिर वही हालात बन जाते हैं। अब फिर से फ्लाईओवरों पर आवागमन रोककर मरम्मत का काम जारी है।

बता दें कि करीब 170 करोड़ रुपए की लागत से बहादुरगढ़ के बालौर चौक, नया गांव चौक, रोहद-दहकौरा चौक, सांपला में बेरी चौक पर फ्लाईओवर के साथ ही रोहतक के गांव खरावड़ से लेकर रोहतक तक सर्विस लेन बनाई जानी थी।

सड़क हादसों को रोकने के लिए बनाए गए थे फ्लाईओवर

चूंकि इन चारों स्थानों पर लगातार हादसे हो रहे थे और सड़क जाम के कारण यातायात अवरुद्ध रहता था। बालौर चौक पर सिद्दीपुर से बहादुरगढ़ तथा नया गांव चौक पर बहादुरगढ़ से बादली की तरफ आने-जाने वाले वाहन हाइवे से ही क्रॉस करते थे।

इसलिए यहां अक्सर वाहनों का टकराव होता था। यहां अनेक जानलेवा दुर्घटनाएं हो चुकी थी। ऐसे में भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) द्वारा नेशनल हाइवे-9 पर फ्लाईओवर और सर्विस लेन बनाने का यह काम अलॉट किया गया था। लोगों को उम्मीद थी कि इन फ्लाईओवरों के निर्माण से नेशनल हाइवे पर सड़क हादसों में कमी आएगी। लेकिन घटिया निर्माण के कारण आमजन की उम्मीद टूट गई है।

बहादुरगढ़। नया गांव चौक पर बने फ्लाईओवर को अवरुद्ध कर जारी मरम्मत का काम।

अब तक कई बार हो चुकी मरम्मत

बहादुरगढ़ के नया गांव चौक और बालौर चौक पर फ्लाईओवरों का निर्माण करीब एक साल पहले पूरा हुआ था। इस एक साल के दौरान घटिया गुणवत्ता के कारण कई बार मरम्मत के लिए पुलों पर ट्रेफिक रोका जा चुका है। बार-बार मरम्मत के बाद वाहनों के आवागमन के लिए इन्हें खोल दिया जाता है। अब फिर से फ्लाईओवरों पर मरम्मत का काम चल रहा है। हाइवे पर दिल्ली-रोहतक की तरफ से तेज गति से वाहन आते-जाते हैं। ऐसे में अवरोधकों के कारण भी हादसे की आशंका रहती है। बेशक ये फ्लाईओवर बनने से अब दिल्ली-रोहतक की तरफ आने-जाने वाले वाहनों की क्रॉसिंग निर्बाध हो गई है। लेकिन फ्लाईओवर पर कई जगह बंप (उछाल) के कारण वाहन चालक ब्रेक लगाने को मजबूर हैं। इसके अलावा नई बनी सड़क की रोड़ी उखड़ती रहती है। गाड़ियां अनियंत्रित होने की आशंका बढ़ जाती है। वाहन चालकों ने फ्लाईओवरों के निर्माण की गुणवत्ता पर सवाल उठाते हुए निर्माण कार्य की जांच करवाने की मांग की है। साथ ही निर्माण में सामने आई खामियां स्थाई तौर पर दुरुस्त करने का अनुरोध किया है।

जाखोदा में खेलते-खेलते पानी से भरे गड्ढे में गिरा छह साल का बच्चा, मौत

■ बच्चों के साथ खेलने निकला था आर्यन ■ अचानक लापता हो गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

गांव जाखोदा में दर्दनाक हादसा हो गया। कमजोर दृष्टि का छह वर्षीय मासूम पानी के गड्ढे में डूब गया। तलाश के दौरान शनिवार को उसका शव बरामद हुआ। पुलिस ने पोस्टमार्टम करा शव परिजनों को सौंप दिया है। दरअसल, उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर का दिनेश पाल पिछले कुछ समय से यहां जाखोदा में रहता है। इसके पास तीन बच्चे हैं। सबसे बड़ा बेटा करीब छह वर्षीय आर्यन शुक्रवार को अन्य बच्चों के साथ खेल रहा था। इसी दौरान संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गया। परिजनों ने उसकी तलाश शुरू की और नहीं मिला तो पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने इस संबंध में संबंधित धारा के तहत केस दर्ज कर जांच शुरू की।

सर्च अभियान के दौरान शनिवार को मकान से ही कुछ दूरी पर स्थित एक प्लॉट में भरे पानी से बच्चे का शव बरामद हुआ। पुलिस ने शव पानी से बाहर निकाला और नागरिक अस्पताल लेकर गई। जहां पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू कराई। दरअसल, आर्यन की देखने की क्षमता बेहद कम थी। शुक्रवार को वह बच्चों की आवाज सुनकर उनके पीछे चल दिया। मकान के नजदीक एक प्लॉट में पानी भरा हुआ था। वहां उसका पांव फिसला और डूब गया। निकल नहीं पाया और न ही समय रहते उस पर किसी की नजर गई। इस तरह से मासूम की दर्दनाक मौत हो गई। जांच अधिकारी अशोक कुमार का कहना है कि शनिवार को सर्च अभियान के दौरान बच्चे का शव पाया गया है। मामले में नियमानुसार कार्रवाई की गई है।

ट्रैक्टर की चपेट में आने से महिला की मौत

बहादुरगढ़। नेशनल हाइवे पर नयागांव बाईपास के निकट ट्रैक्टर की चपेट में आने से यूपी मूल की एक महिला की मौत हो गई। पुलिस ने शव को नागरिक अस्पताल में रखवा कर मामले में जांच शुरू कर दी है। मृतका की पहचान करीब 35 वर्षीय सरोज निवासी यूपी के रूप में हुई है। सरोज अपने कुछ परिचितों के साथ ठेकेदार के अधीन मजदूरी करती थी। इन दिनों नेशनल हाइवे पर साफ सफाई का कार्य कर रही थी। शनिवार की सुबह वह नयागांव बाईपास पर एक ट्रैक्टर ट्रॉली की चपेट में आ गई। उसे गंभीर चोट आई। अस्पताल में ले गए तो मृत घोषित कर दी गई। उधर, हादसे के बाद आरोपी चालक अपने ट्रैक्टर को वहीं पर छोड़कर चला गया। ट्रैक्टर डिवाइडर से भी टकराया हुआ है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर वाहन कब्जे में लिया और आवश्यक कार्रवाई शुरू की। बताते हैं कि सरोज तीन बच्चों की मां थी। परिजनों के बयान पर पुलिस मामले में आगामी कार्रवाई करेगी।

चोरी करने वाले का नहीं लगा सुराग

बहादुरगढ़। रेलवे रोड स्थित दुकान में हुई चोरी की वारदात अनसुलझी है। छह दिन बीत जाने के बाद भी वारदात को अंजाम देने वाले शख्स का सुराग नहीं लग पाया है। हालांकि मामले में कई टीमें तफ्तीश कर रही हैं। जल्द ही वारदात सुलझाने की बात कही जा रही है। अनाजमंडी के निवासी राजेश कुमार का घी तेल का व्यवसाय है। उसने रेलवे रोड पर काठ मंडी में दुकान कर रखी है। बीते रविवार की रात को उसकी दुकान में चोरी की वारदात हो गई। चोर दराज से तीन लाख 40 हजार रुपये निकालकर ले गया था। वारदात सीसीटीवी में कैद हो गई थी। जिसमें एक चोर वारदात को अंजाम देता दिखाई दिया। वारदात में किसी भेदी का हाथ होने की आशंका है। दरअसल, चोर ने दुकान में घुसते ही सीधा कैश वाली दराज का ही रुख किया था। अन्य कोई सामान छेड़े या खंगाले बिना पैसे लेकर निकल गया।

असम राइफल्स के जवान राजपाल कादियान को सैनिक सम्मान के साथ दी विदाई

झज्जर। सैनिक राजपाल कादियान को सैन्य सम्मान के साथ अंतिम विदाई देते हुए असम राइफल्स के जवान। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

क्षेत्र के गांव सिवाना निवासी सैनिक राजपाल कादियान का हृदय गति रुकने से निधन हो गया। उनका पार्थिव शरीर शनिवार को पैतृक गांव सिवाना लाया गया। यहां सैन्य सम्मान के साथ उन्हें अंतिम विदाई दी गई। परिजनों ने बताया कि राजपाल कादियान मार्च 2004 में असम राइफल्स में भर्ती हुए थे। वे अपने पीछे 16 वर्षीय पुत्र नैतिक, 13 वर्षीय पुत्री जया, पत्नी ममता और मां को छोड़ गए हैं। असम राइफल्स की ओर से पार्थिव शरीर के साथ आए जवान धर्मेंद्र ने बताया कि बीती 10 जुलाई को ड्यूटी के दौरान राजपाल को सीने में दर्द की शिकायत हुई, जिसके बाद उन्हें उपचार के लिए आर्मी हॉस्पिटल ले जाया गया। जहां चिकित्सकों की टीम ने हृदय गति रुकने से मृत्यु की पुष्टि की। इस दौरान सिवाना के ग्राम सरपंच सुरेश कुमार, पूर्व सरपंच भागमल, जयपाल, प्रमोद, राजेंद्र, ब्लॉक समिति सदस्य कलीराम, सूरजमल, माजरा सरपंच विनोद, दूबलधन सरपंच जितेंद्र, पूर्व सरपंच सोमबीर सहित ग्रामीणों ने अंतिम दर्शन कर वीर सैनिक को भावभीनी विदाई दी।

■ 10 जुलाई को ड्यूटी के दौरान हार्ट अटैक से निधन हो गया था

इक्विटी फंड्स ने एसआईपी पर 27% तो लंपसम पर 23% दिया सालाना रिटर्न

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

निवेशकों की हो गई बढ़िया कमाई, लगातार बढ़ रहे निवेशक, लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर निवेश करेंगे तो हो जाएंगे मालामाल

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में हमेशा लॉन्ग टर्म के लिए पैसे लगाने की बात कही जाती है। आंकड़े भी यही बताते हैं कि इक्विटी फंड्स में 10 साल के लिए निवेश करने पर पॉजिटिव रिटर्न की पूरी संभावना रहती है, जबकि निगेटिव रिटर्न की आशंका ना के बराबर रह जाती है। यहां हम कुछ ऐसे इक्विटी फंड्स के बारे में बताएंगे, जिन्होंने पिछले 10 साल में शानदार प्रदर्शन करते हुए सबसे ज्यादा रिटर्न दिए हैं। इन इक्विटी फंड्स ने न सिर्फ लंपसम इनवेस्टमेंट पर सालाना 19 से 23 फीसदी तक फायदा कराया है, बल्कि एसआईपी करने वालों को भी 22 से 27 फीसदी तक एन्युलाइज्ड रिटर्न दिया है। हमने यहां सिर्फ उन्हीं फंड्स को लिया है, जिनकी वैल्यू रिसर्च की रेटिंग 4 या 5 स्टार है।

10 साल में बेस्ट रिटर्न देने वाले इक्विटी फंड

यहां हम जिन इक्विटी म्यूचुअल फंड्स की जानकारी दे रहे हैं, उनमें एसआईपी पर सबसे ज्यादा रिटर्न देने वाली स्कीम में अगर किसी ने 10 साल पहले हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी शुरू की होगी, तो उनके 12 लाख के निवेश की मौजूदा फंड वैल्यू 49 लाख रुपये तक पहुंच गई होगी। इन सभी फंड्स ने एसआईपी और लंपसम दोनों में अच्छा-खासा मुनाफा दिया है। वह भी अच्छी रेटिंग के साथ।

1. निप्पॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान
- वैल्यू रिसर्च की रेटिंग : 5 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 22.76%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 7,77,138 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्युलाइज्ड रिटर्न : 25.02%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 44,53,987 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.64%

2. क्वांट ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड - डायरेक्ट प्लान
- वैल्यू रिसर्च की रेटिंग : 4 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 21.65%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 7,09,694 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्युलाइज्ड रिटर्न : 23.59%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 41,25,214 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.51%

3. क्वांट स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

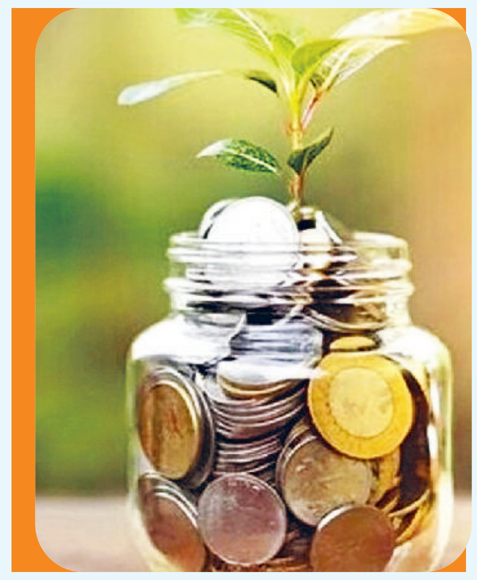

- वैल्यू रिसर्च की रेटिंग : 4 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 20.83%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 6,63,497 रुपये
- **SIP** पर 10 साल का एन्युलाइज्ड रिटर्न : 26.83%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 49,08,676 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.66%

4. इनवेस्को इंडिया मिड कैप फंड - डायरेक्ट प्लान
- वैल्यू रिसर्च की रेटिंग : 4 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 19.67%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 6,02,320 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्युलाइज्ड रिटर्न : 23.24%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 40,48,537 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.63%

5. कोटक मिड कैप फंड - डायरेक्ट प्लान
- वैल्यू रिसर्च की रेटिंग : 4 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 19.45%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 5,91,346 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्युलाइज्ड रिटर्न : 21.92%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 37,71,502 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.38%

6. एडलवाइज मिड कैप फंड - डायरेक्ट प्लान
- वैल्यू रिसर्च की रेटिंग : 5 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 19.44%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 5,90,999 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्युलाइज्ड रिटर्न : 23.47%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 40,98,172 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.39%

7. एचडीएफसी मिड कैप फंड - डायरेक्ट प्लान
- वैल्यू रिसर्च की रेटिंग : 5 स्टार
- लंपसम निवेश पर 10 साल का औसत सालाना रिटर्न (सीएजीआर) : 19.03%
- 1 लाख रुपये के लंपसम निवेश की 5 साल बाद वैल्यू : 5,70,794 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्युलाइज्ड रिटर्न : 22.09%
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी से 10 साल में कुल निवेश : 12 लाख रुपये
- 10,000 रुपये मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 38,07,119 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.75%

क्या बता रहे हैं आंकड़े

10 साल में बेस्ट परफॉर्मेंस देने वाले इन इक्विटी फंड्स में 4 मिडकैप फंड, 2 स्मॉल कैप फंड और एक ईएलएसएस फंड है। इन सभी के रिटर्न के आंकड़ों से एक बात तो साफ है कि अगर निवेशक सही स्कीम में लॉन्ग टर्म के लिए निवेश करें तो काफी अच्छा मुनाफा ले सकते हैं। फिर चाहे वो लंपसम इनवेस्टमेंट हो या मंथली एसआईपी के जरिये किया गया निवेश। हालांकि म्यूचुअल फंड में पिछले रिटर्न के भविष्य में जारी रहने की गारंटी नहीं होती, लेकिन लंबी अवधि के लिए किया गया रेगुलर इनवेस्टमेंट आमतौर पर फायदेमंद साबित होता है, लेकिन स्टॉक्स में एक्सपोजर की वजह से इन सभी इक्विटी फंड्स को बहुत अधिक जोखिम की रेटिंग मिली हुई है। लिहाजा निवेश के बारे में कोई भी फैसला करने से पहले अपने रिस्क प्रोफाइल यानी जोखिम बर्दाश्त करने की क्षमता को जरूर ध्यान में रखें।

जितनी लंबी नौकरी, उतनी ही ज्यादा मिलेगी ग्रैच्युटी

- एक कंपनी में लगातार 5 साल या उससे ज्यादा समय तक काम करने पर मिलती है ग्रैच्युटी
- यह लॉयल्टी बोनस की तरह है, जिसे पेमेंट ऑफ ग्रेच्युटी एक्ट, 1972 के तहत लागू किया है

समझदारी
बिजनेस डेस्क

अगर आप एक ही कंपनी में लंबे समय तक काम करते हैं, तो रिटायरमेंट या नौकरी छोड़ने पर कंपनी की ओर से ग्रेच्युटी के रुप में एक खास तोहफा मिलता है। ये एक तरह से लॉयल्टी या लंबे समय की सेवा का रिवार्ड होती है, जो आपकी मेहनत का इनाम है, लेकिन लोग अक्सर इसको लेकर कंफ्यूज रहते हैं कि ग्रेच्युटी रकम कब मिलती है, कितनी मिलती है और कैसे मिलती है? अगर आपकी सैलरी अंतिम सैलरी 25,000, 30,000 या 40,000 रुपये है और आपने एक ही कंपनी में 15 साल तक काम किया है, तो आपको रिवार्ड के रूप में कितनी गेच्युटी मिलेगी? यहां दिए गए कैलकुलेशन से समझिए।

ग्रेच्युटी क्या होती है?

ग्रेच्युटी वो रकम है जो कंपनी आपको तब देती है जब आपने लगातार 5 साल या उससे ज्यादा समय तक वहां काम किया हो। ये लॉयल्टी बोनस की तरह है, जिसे पेमेंट ऑफ ग्रेच्युटी एक्ट, 1972 के तहत लागू किया गया है।

किन हालातों में मिलती है ग्रेच्युटी
- रिटायरमेंट पर
- नौकरी छोड़ने पर (5 साल की सेवा के बाद)
- अस्थायी या स्थायी अपंगता पर
- कर्मचारी की मृत्यु की स्थिति में (नॉमिनी को)

ग्रेच्युटी के लिए कौन है एलिजिबल?
- अगर आपने एक ही कंपनी में लगातार 5 साल काम किया है तो आप इसके हकदार हैं। मृत्यु या विकलांगता की स्थिति में 5 साल पूरे ना होने पर भी ग्रेच्युटी दी जाती है।

ग्रेच्युटी कैलकुलेशन के लिए क्या है फॉर्मूला
- ग्रेच्युटी = (15 × अंतिम वेतन × सेवा के वर्षों की संख्या) ÷ 26
- अंतिम सैलरी = बेसिक सैलरी + डीए (महंगाई भत्ता)

कैसे होती है ग्रेच्युटी कैलकुलेशन?
- ग्रेच्युटी की राशि निम्नलिखित सूत्र से गणना की जाती
- ग्रेच्युटी = (15 × अंतिम वेतन × सेवा के वर्षों की संख्या) ÷ 26
- यहां, अंतिम वेतन में मूल वेतन और महंगाई भत्ता (डीए) शामिल होते हैं।
- उदाहरण के लिए अगर आपका अंतिम सैलरी 25,000 रुपये है और आपने 15 साल नौकरी की है, तो

ग्रेच्युटी मिलेगी
- ग्रेच्युटी = (15 × 25,000 × 15)/26 = 2,16,346 रुपये यानी लगभग 2.16 लाख
- इसी तरह, अगर किसी की अंतिम सैलरी 30,000 रुपये है ग्रेच्युटी मिलेगी
- ग्रेच्युटी = (15 × 30,000 × 15)/26 = 2,59,615 रुपये यानी लगभग 5.60 लाख
- अगर अंतिम सैलरी 40,000 है, तो ग्रेच्युटी मिलेगी
- ग्रेच्युटी = (15 × 40,000 × 15)/26 = 3,46,153 रुपये यानी लगभग 3.46 लाख

गणना में अधूरे साल का क्या होता है?

ग्रेच्युटी वो रकम है जो कंपनी अपने कर्मचारी को तब देती है जब उसने लगातार 5 साल या उससे ज्यादा समय तक उसी कंपनी में काम किया हो। ये एक तरह से लॉयल्टी या लंबे समय की सेवा का रिवार्ड होता है. खास बात ये है कि अगर आपने किसी साल 6 महीने या उससे ज्यादा काम किया है, तो उसे पूरा साल माना जाता है। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि ग्रेच्युटी की गणना करते समय अगर किसी कर्मचारी ने किसी साल में 6 महीने या उससे अधिक अतिरिक्त सेवा की है, तो उस अधूरे वर्ष को भी पूरा साल माना जाता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपने 8 साल और 8 महीने काम किया है, तो ग्रेच्युटी कैलकुलेशन में आपकी सेवा अवधि 8 नहीं बल्कि 9 साल मानी जाएगी. यह नियम पेमेंट ऑफ ग्रेच्युटी एक्ट, 1972 के तहत लागू होता है, और इसके लिए (15 × अंतिम सैलरी × कुल सर्विस ईयर)/26 का फॉर्मूला इस्तेमाल किया जाता है।

- (15 × 25,000 × 9)/26 = 1,29,807 रुपये यानी लगभग 1.30 लाख
- इसी तरह, अगर किसी की अंतिम सैलरी 30,000 रुपये है, तो
- ग्रेच्युटी = (15 × 30,000 × 9)/26 = करीब 1,55,769 रुपये
- और अगर अंतिम सैलरी 40,000 रुपये है, तो
- ग्रेच्युटी = (15 × 40,000 × 9)/26 = 2,07,692 रुपये के आसपास मिलेगी

क्या कंपनी ग्रेच्युटी देने से मना कर सकती है?

यदि कंपनी 'पेमेंट ऑफ ग्रेच्युटी एक्ट, 1972' के अंतर्गत आती है, तो वह कानूनी रूप से ग्रेच्युटी देने से मना नहीं कर सकती। हालांकि, यदि कर्मचारी को अनुशासनहीनता या नैतिक अपराध के कारण बर्खास्त किया गया है, तो कंपनी ग्रेच्युटी देने से इनकार कर सकती है, जितनी लंबी नौकरी और जितना अधिक वेतन, उतनी ज्यादा ग्रेच्युटी। यह आपकी सेवा का सम्मान है, जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

(नोटः यह जानकारी सामान्य गणनाओं पर आधारित है। सटीक रकम जानने के लिए किसी वित्तीय सलाहकार से संपर्क करें या कंपनी के एचआर विभाग से जानकारी प्राप्त करें।)

पांच साल में 25 से 33% सालाना रिटर्न इन फ्लेक्सी कैप फंड्स ने दिखाया दम

- फ्लेक्सी कैप फंड इक्विटी फंड्स की सबसे फ्लेक्सिबल और डायवर्सिफाइड कैटेगरी
- हर तरह के मार्केट कैप यानी लार्जकैप, मिडकैप और स्मॉलकैप स्टॉक में निवेश करते

विश्लेषण
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड निवेशकों में इक्विटी फ्लेक्सी कैप फंड कैटेगरी को लेकर अट्रैक्शन लगातार बढ़ रहा है। एम्फी द्वारा जारी किया गया जून 2025 का डाटा देखें तो फ्लेक्सी कैप फंड निवेशकों की पहली पसंद बने और इस कैटेगरी में 5,733 करोड़ रुपये का निवेश आया। यह मई 2025 में 3,841 करोड़ रुपये की तुलना में 49% की बढ़त है। इस कैटेगरी में शामिल फंड भी सुपर परफॉर्म कर रहे हैं। 5 साल के दौरान 14 फ्लेक्सीकैप फंड का रिटर्न 25 फीसदी सालाना से ज्यादा रहा। वहीं, कम से कम 45 फंड ने 20 फीसदी सालाना से ज्यादा रिटर्न दिया। इससे निवेशकों के मन में इन फंडों के प्रति आकर्षण अब लगातार बढ़ता जा रहा है। निवेशक अच्छा पैसा कूट रहे हैं।

फ्लेक्सीकैप फंड में क्यों बढ़ा अट्रैक्शन

फ्लेक्सीकैप फंड कैटेगरी की बात करें तो यह इक्विटी फंड्स की सबसे फ्लेक्सिबल और डायवर्सिफाइड कैटेगरी मानी जाती है। ये फंड हर तरह के मार्केट कैप यानी लार्जकैप, मिडकैप और स्मॉलकैप स्टॉक में निवेश करते हैं। वहीं इनमें यह सुविधा भी होती है कि बाजार के माहौल के हिसाब से एक तरह के मार्केट कैप से दूसरे मार्केट कैप में निवेश शिफ्ट कर सकें, जिससे बाजार में उतार चढ़ाव का इन पर कम असर होता है। सेबी के नियमों के अनुसार, इन फंड्स को कम से कम 65% पैसा इक्विटी में लगाना जरूरी होता है, लेकिन कई बार यह 90% से ज्यादा भी होता है।

5 वर्ष : 14 फंड ने दिया 25% रिटर्न
- क्वांट फ्लेक्सीकैप फंड : 32.81%
- आईसीआईसीआई प्रू रिटायरमेंट प्योर इक्विटी फंड : 30.85%
- एचडीएफसी फोकस्ड फंड : 30.11%
- एचडीएफसी फ्लेक्सीकैप फंड : 29.95%
- बैंक ऑफ इंडिया फ्लेक्सीकैप फंड : 29.54%
- एचडीएफसी रिटायरमेंट सेविंग्स इक्विटी फंड : 27.89%
- आईसीआईसीआई प्रू फोकस्ड इक्विटी फंड : 27.38%
- जेएम फ्लेक्सीकैप फंड : 27.24%

- फ्रैंकलिन इंडिया फ्लेक्सीकैप फंड : 26.73%
- एडलवाइज फ्लेक्सीकैप फंड : 25.78
- पराग पारिख फ्लेक्सीकैप फंड : 25.72%
- फ्रैंकलिन इंडिया फोकस्ड इक्विटी फंड : 25.20%
- निप्पोन इंडिया फोकस्ड फंड : 25%
- 360 वन फोकस्ड फंड : 24.52%

ऐसा रहा रिटर्न

5 साल के दौरान इस कैटेगरी की 14 स्कीम ऐसी हैं, जिन्होंने 25 से 33 फीसदी सालाना रिटर्न दिया है. वैल्यू रिसर्च ने फ्लेक्सी कैप और फोकस्ड फंड को एक ही कैटेगरी में शामिल किया है। असल में दोनों की निवेश करने की स्ट्रैटेजी एक जैसी होती है. अंतर बस इतना है कि फोकस्ड फंड्स अधिकतम 30 स्टॉक्स में ही निवेश कर सकते हैं, जबकि फ्लेक्सी कैप फंड्स में ऐसी कोई लिमिट नहीं होती है।

कम से कम 3 गुना किया पैसा

5 साल में अगर कोई फंड 25 फीसदी सीएजीआर ग्रोथ दिखा रहा है, तो इसका मतलब है कि 5 साल का एबसॉल्यूट रिटर्न 300 फीसदी हुआ। यानी आपका 1 लाख रुपये 5 साल में 3 लाख रुपये हो गया। इसका मतलब है कि फ्लेक्सीकैप फंड की 14 स्कीम ऐसी हैं, जिन्होंने 5 साल में कम से कम निवेशकों का पैसा 3 गुना बढ़ाया। 30 से 33 फीसदी रिटर्न वाली स्कीम में 3.5 से 4 गुना पैसा बढ़ गया।

45 फंड का रिटर्न 20% से ज्यादा रिटर्न

बीते 5 साल में 14 फंड ने 25 फीसदी सालाना से ज्यादा रिटर्न दिया तो कम से कम 45 फंड ऐसे हैं, जिनमें 20 फीसदी सालाना से ज्यादा रिटर्न मिला. यानी 20 से 25 फीसदी के बीच रिटर्न देने वारली स्कीम की संख्या 31 है। इसी से निवेशक अंदाजा लगा सकते हैं कि ये फंड किस तरह का प्रदर्शन कर रहे हैं। 5 साल में क्वांट फ्लेक्सीकैप फंड 32.81% एनुअलाइज्ड रिटर्न के साथ टॉप पर है। एचडीएफसी फ्लेक्सीकैप फंड, बैंक ऑफ इंडिया फ्लेक्सीकैप फंड, आईसीआईसीआई प्रू फोकस्ड इक्विटी फंड, जेएम फ्लेक्सीकैप फंड और फ्रैंकलिन इंडिया फ्लेक्सीकैप फंड भी टॉपर्स में शामिल हैं।

क्या है फ्लेक्सीकैप फंड

फ्लेक्सीकैप फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो विभिन्न मार्केट कैपिटलाइजेशन के शेयरों में निवेश करता है, जैसे कि लार्ज-कैप, मिड-कैप और स्मॉल-कैप। इसका उद्देश्य विभिन्न बाजार स्थितियों में लचीलापन प्रदान करना और पोर्टफोलियो को विविध बनाना है।

फ्लेक्सीकैप की विशेषताएं
- लचीलापनः फ्लेक्सीकैप फंड विभिन्न मार्केट कैपिटलाइजेशन के शेयरों में निवेश करता है, जिससे फंड मैनेजर को बाजार की स्थितियों के अनुसार निवेश निर्णय लेने की स्वतंत्रता मिलती है।
- विविधीकरणः फ्लेक्सीकैप फंड विभिन्न सेक्टर्स और मार्केट कैपिटलाइजेशन के शेयरों में निवेश करता है, जिससे पोर्टफोलियो का विविधीकरण होता है।
- सक्रिय प्रबंधनः फ्लेक्सीकैप फंड का प्रबंधन सक्रिय रूप से किया जाता है, जिससे फंड मैनेजर बाजार की स्थितियों के अनुसार निवेश निर्णय ले सकते हैं।

काम की बात कोई भी कर्ज लेने से पहले ब्याज दर, शुल्क, शर्तें और इससे जुड़ी शर्तों का पता करें, ताकि बाद में आपको कोई नुकसान नहीं उठाना पड़े

पेमेंट ऐप से ले रहे हैं लोन, तो जान लें इसके फायदे-नुकसान पर्सनल लोन लेना आसान है, अपनी जानकारी जरूर जुटाएं

पेमेंट एप से पर्सनल लोन लेना बेहद आसान है। ये ऐप कई बैंकों और वित्तीय संस्थानों के साथ साझेदारी करता है

जानकारी
बिजनेस डेस्क

डिजिटल पेमेंट के इस दौर में गूगल पे जैसे ऐप्स ने न केवल पैसे भेजने और बिल भरने का तरीका आसान किया है, बल्कि अब ये पर्सनल लोन जैसी दूसरी सेवाएं भी दे रहे हैं। गूगल पे के जरिए पर्सनल लोन लेना कई लोगों के लिए सुविधाजनक विकल्प बन रहा है, लेकिन इसके फायदे और नुकसान दोनों हैं। इसके अलावा, कुछ छिपी हुई लागत भी हो सकती हैं, जिन्हें समझना जरूरी है। यहां हम गूगल पे के जरिए पर्सनल लोन लेने के अलग-अलग पहलुओं को आसान भाषा में समझने की कोशिश करेंगे, ताकि सही समय पर जरूरत के हिसाब से सही फैसला लिया जा सकें।

लोन लेने की प्रक्रिया और सुविधा गूगल पे के जरिए पर्सनल लोन लेना बेहद आसान है। यह ऐप कई बैंकों और वित्तीय संस्थानों के साथ साझेदारी करता है, जैसे कि एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक और अन्य एनबीएफसी (गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां)।

यह करना होगा यूजर को

यूजर को गूगल पे ऐप पर लोन सेक्शन में जाकर अपनी जरूरत के हिसाब से लोन राशि और अवधि चुननी होती है। आमतौर पर, लोन की मंजूरी कुछ ही मिनटों में मिल जाती है, बशर्ते आपका क्रेडिट स्कोर अच्छा हो और डॉक्यूमेंट्स पूरे हों। अभी गूगल पे 10,000 रुपये से लेकर 8 लाख रुपये तक के पर्सनल लोन ऑफर करता है, जिसकी ब्याज दरें 10.99% से शुरू होकर 36% तक जा सकती हैं। यह प्रक्रिया पूरी तरह डिजिटल है, यानी आपको बैंक की शाखा में जाने की जरूरत नहीं पड़ती। साथ ही, लोन की राशि सीधे आपके बैंक खाते में ट्रांसफर हो जाती है, जो इसे तेज और सुविधाजनक बनाता है।

गूगल पे से लोन के नुकसान व जोखिम

हालांकि गूगल पे के जरिए लोन लेना आसान है, लेकिन इसके कुछ नुकसान भी हैं। सबसे बड़ा जोखिम है ऊंची ब्याज दरें। न्यूज वेबसाइट मनीकंट्रोल की एक रिपोर्ट के मुताबिक, कई एनबीएफसी जो गूगल पे के साथ साझेदारी करते हैं, वे अन्य बैंकों की तुलना में ज्यादा ब्याज वसूलते हैं, खासकर अगर आपका क्रेडिट स्कोर कम है। इसके अलावा, लोन की अवधि छोटी होने पर मासिक किस्त (ईएमआई) ज्यादा हो सकती है, जो आपके मासिक बजट पर दबाव डाल सकती है।

गूगल पे एक प्लेफार्म

एक और बात ध्यान देने वाली है कि गूगल पे खुद लोन नहीं देता, बल्कि वह एक प्लेटफॉर्म है जो आपको लेंडर्स से जोड़ता है। इसलिए, लोन के नियम और शर्तें उस वित्तीय संस्थान पर निर्भर करती हैं, जिसके साथ आप लोन ले रहे हैं। अगर आप नियम और शर्तें ठीक से नहीं पढ़ते, तो बाद में परेशानी हो सकती है।

छिपी हुई लागत और सावधानियां

गूगल पे के जरिए लोन लेते समय कुछ छिपी लागतें भी हो सकती हैं, जिन्हें अक्सर लोग अनदेखा कर देते हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, कई लोन ऑफर में प्रोसेसिंग फीस, समय से पहले भुगतान का शुल्क (प्री-पेमेंट चार्ज), और देर से भुगतान की पेनल्टी शामिल हो सकती है।

क्या है गूगल पे

गूगल पे एक डिजिटल पेमेंट प्लेटफ़ॉर्म है जो गूगल द्वारा विकसित किया गया है। यह उपयोगकर्ताओं को अपने मोबाइल डिवाइस का उपयोग करके ऑनलाइन और ऑफलाइन पेमेंट करने की अनुमति देता है।

पेमेंट एप की विशेषताएं
- डिजिटल पेमेंट : गूगल पे उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन और ऑफलाइन पेमेंट करने की अनुमति देता है।
- मोबाइल पेमेंट : गूगल पे मोबाइल डिवाइस का उपयोग करके पेमेंट करने की अनुमति देता है।
- कॉन्टैक्टलेस पेमेंट : गूगल पे कॉन्टैक्टलेस पेमेंट की अनुमति देता है, जिससे उपयोगकर्ता अपने मोबाइल डिवाइस को पेमेंट टर्मिनल के पास रखकर पेमेंट कर सकते हैं।
- सुरक्षा : गूगल पे में कई सुरक्षा विशेषताएं हैं, जैसे कि टोकनाइजेशन और बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन, जो उपयोगकर्ताओं के वित्तीय डेटा को सुरक्षित रखती हैं।

पेमेंट एप के लाभ
- सुविधाः गूगल पे उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन और ऑफलाइन पेमेंट करने की सुविधा प्रदान करता है।
- सुरक्षाः गूगल पे में कई सुरक्षा विशेषताएं हैं जो उपयोगकर्ताओं के वित्तीय डेटा को सुरक्षित रखती हैं।
- गतिः गूगल पे पेमेंट प्रक्रिया को तेज और आसान बनाता है।
- व्यापक स्वीकृतिः गूगल पे को कई ऑनलाइन और ऑफलाइन मर्चेंट्स द्वारा स्वीकार किया जाता है।
- गूगल पे एक सुविधाजनक और सुरक्षित डिजिटल पेमेंट प्लेटफ़ॉर्म है जो उपयोगकर्ताओं को ऑनलाइन और ऑफलाइन पेमेंट करने की अनुमति देता है।

मुख्य रास्तों पर जल भराव के कारण घरों में कैद नीमवाली कालोनी के निवासी

- कालोनी से जाने वाले सभी रास्तों पर हुआ जल भराव, शहर से टूट गया संपर्क
- हर वर्ष बरसात के दिनों में होता है जलभराव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। नीमवाली कालोनी में मुख्य गली में हुए जल भराव से गुजरते कालोनीवासी। फोटो :हरिभूमि

झज्जर। कालोनीवासी प्रिया,प्रमिला देवी,सुमन देवी,कृष्णा देवी,ओम सिंह सिद्धांती।

पिछले दिनों आई बरसात के कारण शहर की नीमवाली कालोनी के सभी मुख्य रास्तों में जल भराव की स्थिति उत्पन्न हो गई है। मुख्य गली में डेढ़ से दो फुट तक पानी जमा है। नगर परिषद द्वारा पानी निकासी के लिए पंप सेट की व्यवस्था की है लेकिन वे बंद पड़े हैं। पानी निकासी न होने के कारण कालोनी वासियों को परेशानी आ रही है। उनकी दिनचर्या केवल घर तक सीमित होकर रह गई है। कालोनीवासी एडवोकेट ऋचा शर्मा, प्रदीप दलाल, विनोद जेई, अशोक कुमार, सतबीर फौजी, मास्टर विनोद, नरेंद्र, प्रेम, मोनिका, सरिता, सुनीता, सविता, गुड्डी, कविता आदि ने कहा कि मुख्य रास्ते के साथ-साथ उनकी घर व गली भी पानी की जद में आ गए हैं। चारों तरफ जल भराव की स्थिति उत्पन्न है। जिला प्रशासन द्वारा पानी निकासी के लिए पंप सेट भी लगाए थे लेकिन वे अब बंद पड़े हैं। जिस कारण वे अपनी कालोनी में कैदी जैसी जिंदगी गुजारने को मजबूर हैं। कालोनीवासियों का कहना है कि बरसात के दिनों में हर वर्ष बार यह स्थिति बन जाती है। वे अपनी इस समस्या को नगर परिषद के अधिकारियों व कर्मचारियों से लेकर जिला प्रशासनिक अधिकारियों तक को अवगत करा चुके हैं। उन्होंने कहा कि सीएम विंडो में भी शिकायत दे चुके हैं लेकिन कोई समाधान नहीं हो पाया। इस जलभराव के कारण जहां संक्रमण का खतरा बना है।

दूसरी कालोनियों का पानी भी हो रहा है गली में जमा

पूर्व गिरदावर जयवीर सिंह ने बताया कि नगर परिषद द्वारा यहां पानी निकासी के लिए नाला निर्माण कराया जा रहा था। शहर की जयहिंद कालोनी, माता गेट आदि क्षेत्र के पानी की निकासी भी इस नाले से होनी थी। यह कार्य अधर लटका होने के कारण अब अन्य कालोनियों का पानी भी यहां आकर गली में जमा हो रहा है। पहले के वर्षो के मुकाबले अबकी बार अधिक पानी जमा है। गहरे पानी के कारण उनके वाहन भी बंद हो जाते हैं।

स्कूल नहीं जा पा रहे बच्चे

कालोनी वासी प्रिया ने बताया कि उनके पति दुबई में नौकरी करते हैं। जल भराव के कारण स्कूल बस भी गली में नहीं आ पाती। ऐसे में या तो उन्हें बाईपास पर अपने बच्चों को पानी के बीच से छोड़ कर आना पड़ता है या फिर उनकी छुट्टी करानी पड़ती है। यह स्थिति लगभग सभी कालोनी वासियों की है।

सब्जी लाने में होती है परेशानी

कालोनीवासी कुसुम देवी ने बताया कि उनके पति फेरी लगाकर सब्जी बेचने का कार्य करते हैं। जल भराव के कारण वे मंडी से सब्जी लाने में असमर्थ है। ऐसे में उन्हें घर पर रहना पड़ रहा है। शहर से संपर्क टूटने के कारण रोजमर्रा का सामान लाने में दिक्कत आ रही है। यदि ऐसा ही रहा तो उन्हें खाने के लाले पड़ जाएंगे।

बच्चों की करनी पड़ती है निगरानी

कालोनी वासी प्रमिला देवी ने बताया कि बरसाती पानी उनके घरों तक पहुंच चुका है। इस कारण कई बार सांप आदि जलीय जीव भी उसके घर की दहलीज तक पहुंच चुके हैं। उसके घर में छोटा बच्चा है। गली में हुए जल भराव के कारण उन्हें बच्चों की निगरानी करनी पड़ती है। यह स्थिति भी लगभग सभी घरों की है।

हार्ट पेशंट होने के कारण तबीयत रहती है खराब

पूर्व प्राचार्य ओम सिंह सिद्धांती ने बताया कि वे हार्ट पेशंट हैं। ऐसे में उनकी तबीयत खराब रहती है। इसी के चलते पिछले दिनों जब तबीयत खराब हुई तो उसके परिजनों को गहरे पानी के बीच से उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा। यदि यह स्थिति रात के समय होती है तो स्थिति और अधिक गंभीर हो जाती। पानी के कारण कई लोगों के वाहन खराब हो चुके हैं। लोग एक-दूसरे को अपने वाहन देने से भी कतराने लगे हैं।

ड्यूटी से लेना पड़ रहा अवकाश

कालोनीवासी कृष्णा देवी ने बताया कि उसकी पुत्रवधु गुरुग्राम जिले में अध्यापिका के तौर पर कार्यरत है। जल भराव के कारण उसे अवकाश लेना पड़ रहा है। गुरुग्राम में कार्यरत इंस्पेक्टर सुरेंद्र ने बताया कि इस कालोनी में लगभग सभी नौकरी पेशा लोग रहते हैं जो जल भराव के कारण अपनी ड्यूटी पर नहीं जा पा रहे। उनके वाहन भी गहरे पानी से गुजरने के दौरान खराब हो गए हैं।

खबर संक्षेप

बाल पुरस्कार के लिए आनलाइन आवेदन 31 तक

झज्जर। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए आगामी 31 जुलाई तक राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल पर आवेदन किए जा सकते हैं। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार-2025 के तहत बहादुरी, खेलकूद, सोशल साइंस, विज्ञान एवं तकनीकी, पर्यावरण सहित आर्ट एवं कल्चर के क्षेत्र में असाधारण उपलब्धि हासिल करने वाले 18 वर्ष तक की आयु वाले बच्चों को प्रदान किए जाते हैं। अगले साल जनवरी में आयोजित होने वाले समारोह में राष्ट्रपति द्वारा चयनित बालकों को पुरस्कृत किया जाएगा। अवार्ड की घोषणा 26 दिसंबर को राष्ट्रीय वीर बाल दिवस के अवसर पर की जाएगी।

नशा करने पर होने वाली सामाजिक, आर्थिक और मानसिक परेशानियों के बारे में जानकारी दी

कर्मचारियों को नशे के प्रति जागरूक किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

पुलिस की ओर से शनिवार को बहादुरगढ़ में स्थित एनडी चेयर पार्ट्स कंपनी में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कर्मचारियों को नशे तथा साइबर क्राइम के प्रति जागरूक किया गया। सब इंस्पेक्टर सत्यप्रकाश ने कर्मचारियों को नशा करने पर होने वाली सामाजिक, आर्थिक और मानसिक परेशानियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि नशा करने से जहां हमारे शरीर को नुकसान होता है, वही समाज में हमारी छवि भी खराब होती है। इसलिए नशे से दूर रहें। यदि आपके आसपास कोई नशे का सामान बेचें तो उसकी शिकायत करें। अपने खाते से संबंधित जानकारी भी किसी अज्ञात को न दें।

बहादुरगढ़। कर्मचारियों को जागरूक करते एसआई सत्यप्रकाश, रैली के दौरान स्कूल के मुख्य द्वार पर उपस्थित शिक्षक एवं विद्यार्थी। फोटो :हरिभूमि

नशे के दुष्परिणामों से अवगत करवाया

झज्जर। भारत सरकार द्वारा बीती एक जुलाई से मनाए जा रहे नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जहाजगढ़ में जागरुकता रैली का आयोजन किया गया। रैली का मुख्य उद्देश्य गांव के युवाओं को नशे से दूर रहने के लिए जागरुक करना तथा नशे के दुष्परिणामों से अवगत कराना रहा।

रैली का नेतृत्व एनएसएस इंचार्ज मंदीप ने किया। स्कूल के सभी विद्यार्थियों ने रैली में भागीदारी करते हुए पोस्टर, बैनर और नशा मुक्त संबंधी नारे लगाकर ग्रामीणों में जागरुकता का संदेश दिया। इस मौके पर डीपीई संदीप, प्राध्यापक पवन, राकेश, अशोक और लैब अटेंडेंट बलजीत कटारिया सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

नेहरू कॉलेज और ग्राम पंचायत मिलकर चलाएंगे नशा मुक्ति अभियान

दलबीर सिंह

झज्जर। राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय अब अपने आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों को आउटरीच प्रोग्राम के तहत नशामुक्त बनाने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाएगा। इस दिशा में स्थानीय ग्राम पंचायतों के सहयोग से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। प्राचार्य दलबीर सिंह ने बताया कि नशा मुक्त घर अभियान के माध्यम से कॉलेज के विद्यार्थी गांवों में जाकर लोगों को नशे से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करेंगे। इस कार्य में ग्राम पंचायतों का सहयोग लिया जाएगा। विद्यार्थी नुक्कड़ नाटक, रैली, पोस्टर अभियान, जनसंवाद कार्यक्रम और नशा छोड़ने के लिए परामर्श शिविर जैसी गतिविधियां आयोजित करेंगे। उन्होंने बताया कि हरियाणा सरकार की तरफ से भी इस दिशा में बड़ी पहल की गई है। जो गांव पूर्ण रूप से नशामुक्त घोषित होगा, उसे हरियाणा सरकार द्वारा पुरस्कार स्वरूप राशि प्रदान की जाएगी। इसमें प्रथम स्थान पर आने वाली पंचायत को 51 लाख रुपये, द्वितीय स्थान को 31 लाख रुपये और तृतीय स्थान को 21 लाख रुपये की राशि दी जाएगी।

झज्जर। शहर से निकलती हुई जयवीर छारा की पेटपलनिया यात्रा। फोटो :हरिभूमि

छारा गांव से खाटू श्याम जाने के लिए पेट के बल पर घर से निकला श्याम भक्त जयवीर

झज्जर। जब भगवान किसी की मनोकामना पूर्ण करता है तो भक्त भी उसका आभार जताने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ता। कुछ ऐसा ही उदाहरण उस समय देखने को मिला जब मनोकामना पूर्ण होने के बाद छारा गांव निवासी युवा जयवीर अपने गांव से राजस्थान के खाटू श्याम धाम की ओर पेट के बल लेटते हुए जाता हुआ दिखाई दिया। उसकी इस यात्रा में उसके साथी भी पूरा सहयोग कर रहे है। साथियों द्वारा फोम के गद्दों की सहायता से जयवीर के लिए रास्ता बनाया जाता और जयवीर पेट के बल पर लेटता हुआ अपनी यात्रा में आगे बढ़ता है। दोपहर करीब दो बजे उनका यह जत्था जब अंबेडकर चौक स्थित अखंड ज्योति मंदिर के सामने से गुजरा तो श्याम भक्त एवं मंदिर समिति प्रधान सुभाष दीवान ने उनका अभिनंदन किया। यहां जयवीर व उसकी टीम के सदस्यों द्वारा अपनी यात्रा को अल्पविराम दिया गया। थोड़ी देर आराम करने के बाद यह यात्रा फिर से अपने गंतव्य की ओर आगे बढ़ गई। श्याम भक्त जयवीर ने बताया कि उसने अपनी यह यात्रा बीती नौ जुलाई को शुरू की थी। पेट पलनिया चलने के कारण वे एक दिन में बामुश्किल पांच किलोमीटर की दूरी तय करते हैं। उसकी इस यात्रा में गांव के युवा अन्य श्याम भक्त भी भरपूर सहयोग दे रहे हैं। अभी गांव निकट है और वे अपने गृह जिले में हैं इसलिए गांव से भी अनेक युवा उनके पास पहुंच रहे हैं। इस यात्रा में फिलहाल उनके साथ सन्नी, सागर, सनोज, गौरव, हितेश, टीनू, धर्मेंद्र दलाल, जयवीर गुढ़ा, सोनू बागड़ी, बीरन भिवानी, नरेश पूनिया, सोनू कमांडो खुड्डन, अनिल अहलावत डीघल, नवीन अहलावत व अमर जीत सहयोग कर रहे हैं। समय के अनुरूप उनके सहयोगियों की ड्यूटी स्थानातंरित होती रहती है। श्याम भक्त जयवीर छारा की इस यात्रा में उन्होंने अपनी गाड़ी में बाबा खाटू श्याम का दरबार भी लगाया है। यह दरबार भी उनके साथ-साथ ही चलता रहता है। वे सुबह जहां स्नान आदि से निवृत्त होकर गाड़ी में सजाए गए श्याम दरबार की पूजा-अर्चना कर अपनी यात्रा शुरू करते हैं। शाम को यात्रा के विराम पर भी बाबा की पूजा की जाती है।

सावन में अपनी महक बिखेर रहा घेवर

- घेवर मिठाई के साथ संस्कृति का भी रूप ले चुका

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

सावन का मौसम अपनी खूबसूरती बिखेरने को तैयार है। इस मौसम में अगर मिष्ठान की बात की जाए तो जेहन में घेवर का नाम सबसे पहले आता है। इसके आगे कोई भी मिठाई फीकी पड़ जाती है। स्वीट शॉप पर अन्य मिठाइयां पूरे साल भर मिलती है, लेकिन घेवर केवल सावन के दौरान ही बनता है। घेवर मिठाई के साथ संस्कृति का भी रूप ले चुका है। इसे खासकर तौर पर उत्तर भारत में अलग-अलग तरीके से बनाया जाता है। सावन के महीने में घेवर खाने का मजा ही कुछ और होता है। त्यौहारों के मौके पर तो इसकी मिठास और अधिक हो जाती है।

बहादुरगढ़। बाजार में उपलब्ध घेवर की बढ़ रही मांग। फोटो :हरिभूमि

हालांकि इस बार इस मिठाई की कीमतों ने इसके स्वाद को थोड़ा फीका जरूर कर दिया है। इस वर्ष घेवर के दाम पिछले वर्ष के मुकाबले बढ़ गए हैं। खोए वाला घेवर 450 से 850 रुपए किलो तक मिल रहा है। एक स्वीट शॉप के मालिक जयभगवान सैनी ने बताया कि चीनी, घी और दूध आदि के दाम बढ़ने की वजह से घेवर के दाम बढ़ाए गए हैं। दूध से बनने वाला घेवर 300 से लेकर 500 रुपए किलो तक पहुंच गया है। सावन में घेवर खाना भी लोगों की परंपरा में शामिल है। हलवाइयों ने घेवर की कई किस्में तैयार कर दी हैं। सादा घेवर, खोए वाला घेवर, फैनी घेवर और दूध वाला घेवर आमतौर पर बनाया जाता है। आजकल ब्लड शुगर के मरीजों के लिए शुगर फ्री घेवर भी बनाया जाता है।

कृषि क्षेत्र से जुड़े उपभोक्ताओं को दी कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी

झज्जर। बेरी कस्बा स्थित मां भीमेश्वरी देवी धर्मशाला में शनिवार को पंजाब नेशनल बैंक की स्थानीय शाखा द्वारा कृषि ग्राहक आउटरीच जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर पंजाब नेशनल बैंक रोहतक से दीपक कुमार चौहान ने शिरकत की। कार्यक्रम के दौरान कृषि प्रबंधक उमेश कुमार व अतुल गुलिया ने किसानों, स्वयं सहायता समूह और कृषि क्षेत्र से जुड़े ग्राहकों को पंजाब नेशनल बैंक की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। इस मौके पर बेरी शाखा प्रबंधक रोहित कटारिया, दूबलधन शाखा प्रबंधक प्रवीण सांगवान, डीघल शाखा प्रबंधक बलविंद्र व डिप्टी प्रबंधक नरेश, देवेंद्र, मुकेश, जगत सिंह, जतिन सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

झज्जर। कार्यक्रम में उपस्थित किसान एवं ग्रामीण उपभोक्ता। फोटो :हरिभूमि

घायल व्यक्ति की मदद के लिए दिल खोलकर आगे आएं आमजन

झज्जर। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने बताया कि केंद्र सरकार के सड़क, परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा शुरू की गई राहवीर योजना को हरियाणा में लागू किया गया है। इस योजना के तहत किसी गंभीर दुर्घटना में घायल व्यक्ति को गोल्डन ऑवर (एक घटें के भीतर) में अस्पताल अथवा ट्रामा सेंटर में पहुंचाकर घायल व्यक्ति की जान बचाने वाले मददगार व्यक्ति को 25 हजार रुपये का इनाम दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य दुर्घटना के दौरान घायल हुए व्यक्ति को उसी समय अस्पताल पहुंचा कर उसकी जान बचाने का भ प्रयास करना और समय पर मदद के लिए आमजन को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने बताया कि गंभीर दुर्घटनाओं में मेजर सर्जरी, कम से कम तीन दिन तक हॉस्पिटलाइजेशन, ब्रेन इंजरी, स्पाइनल कॉर्ड इंजरी आदि शामिल हैं। उन्होंने बताया कि मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम 2019 की धारा 134ए और भारत सरकार की 29 सितंबर 2020 की अधिसूचना के तहत राहवीर को कानूनी संरक्षण दिया जाएगा।

न्यूज डायरी

एचआर ग्रीन के खिलाड़ियों ने जीते मेडल

झज्जर। एचआर ग्रीन फील्ड सीनियर सैकेंडरी स्कूल के तीन विद्यार्थियों ने हरियाणा इंटर स्कूल शूटिंग चैंपिनयनशिप में रजत पदक हासिल कर संस्थान का नाम रोशन किया है। विद्यालय के प्राचार्य मोहिंद्र सिंह गुलिया ने बताया कि विजेता विद्यार्थियों में यश गुलिया, अक्षय गुलिया व सागर शामिल हैं। इन तीनों खिलाड़ियों ने राइफल टीम इवेंट में रजत पदक हासिल किया। इसके अलावा खिलाड़ी प्रिंस, श्रीअंश, गौरव चाहर, आर्यन, गौरव पूनिया और संस्कार ने भी प्री-नेशनल के लिए क्वालिफाई किया। प्राचार्य ने विजेता विद्यार्थियों और कोच अमित कुमार को बधाई देते हुए कहा कि यह सफलता उनके अथक परिश्रम, अनुशासन और समर्पण का परिणाम है। उन्होंने सभी विजेता विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

झज्जर। शिक्षकों के साथ उपस्थित शूटिंग चैंपियनशिप के विजेता खिलाड़ी।

शास्त्री के जन्मदिन पर बड़ौली ने दी बधाई

बहादुरगढ़। भाजपा मंडल प्रवक्ता विशाल शास्त्री अपने जन्मदिन पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली से मिलने पहुंचे। उन्होंने केक काटकर व मिठाई खिलाकर विशाल शास्त्री को जन्मदिन की बधाई दी। उन्होंने कहा कि भाजपा में कार्यकर्ताओं का मान और सम्मान सर्वोपरि है। इस अवसर पर वरुण शर्मा भी मौजूद रहे।

मल्टीलेवल पार्किंग को बताया धन का दुरुपयोग

बहादुरगढ़। नगर परिषद द्वारा मल्टीलेवल पार्किंग के लिए जमीन चिह्नित करने के प्रयासों पर पूर्व पार्षद जसबीर सैनी ने सवाल उठाए हैं। उनके अनुसार मल्टीलेवल पार्किंग नाम पर सरकारी धन का दुरुपयोग होना तय है। सैनी ने कहा कि यह जनता के पैसों की बर्बादी के सिवाय कुछ नहीं है। उन्होंने बताया कि पुराने लघु सचिवालय परिसर में भी कई साल पहले लाखों रुपए खर्च करके आमजन के लिए मल्टीलेवल पार्किंग बनाई गई थी। लेकिन यह बिना उपयोग के ही कबाड़ बन गई। फिर से नगरपरिषद उसी राह पर चल रही है। उन्होंने कहा कि आमजन के लिए जरूरी काम पहले किए जाने चाहिएं। वे इस विषय को लेकर मुख्यमंत्री से भी बात करेंगे।

बहादुरगढ़। पुराने लघु सचिवालय में कबाड़ बनी मल्टीलेवल पार्किंग। फोटो :हरिभूमि

टीचर कॉलोनी की गलियों में भरा सीवर का गंदा पानी

बहादुरगढ़। शहर की टीचर कॉलोनी की गलियों में बीते कई सालों से सीवर ओवरफ्लो की समस्या बनी हुई है। सीवर का गंदा पानी गलियों में भर जाता है, जिससे स्थानीय निवासी नारकीय जीवन जीने को मजबूर हो गए हैं। गलियों में भरे सीवर के पानी ने पूरी कॉलोनी को गंदगी के तालाब में तब्दील कर दिया है। हालात ऐसे हैं कि लोग अपने घरों से बाहर निकलने से कतरा रहे हैं। बच्चों का स्कूल जाना भी मुश्किल हो गया है। स्थानीय निवासी रवींद्र सिंह मान, ज्ञान सिंह, सोमबीर दहिया, सुभाष, मोना, आनंद, अनिल कुमार, संजय सिहंल व अनिल दहिया आदि का कहना है कि जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग को बार-बार शिकायतें भेजने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई है। अधिकारी न तो मौके पर आते हैं और न ही कोई कार्रवाई होती है। लोगों का कहना है कि क्षेत्र में रहना अब नरक में जीने जैसा हो गया है। गलियों में भरे गंदे पानी में मच्छर और मक्खियों का प्रकोप बढ़ गया है, जिससे बीमारियों का खतरा मंडरा रहा है। दुर्गंध के कारण घरों में सांस लेना भी मुश्किल हो गया है। गली में रहने वाले बुजुर्गों और छोटे बच्चों की स्थिति सबसे ज्यादा खराब है। गंदे पानी के कारण रोजमर्रा के काम प्रभावित हो रहे हैं। सुबह स्कूल जाने वाले बच्चों को रास्ता पार करना एक बड़ी चुनौती बन गया है। अभिभावक अपने बच्चों को कंधों पर उठाकर स्कूल पहुंचाने को मजबूर हैं। कई बार बच्चे स्कूल तक नहीं जा पाते। स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया कि विभाग की लापरवाही और अनदेखी के कारण कॉलोनी में यह स्थिति बनी है।

चरणबद्ध तरीके से बदहाल हो चुके स्टेडियमों का होगा सुधार

प्रदेश के 162 राजीव गांधी खेल स्टेडियमों का होगा कायाकल्प

- डी प्लान का 10 प्रतिशत पैसा खेल सुविधाओं पर होगा खर्च

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

प्रदेश भर के 162 राजीव गांधी खेल स्टेडियमों की हालत सुधारने के लिए कार्ययोजना तैयार की गई है। हरियाणा ओलंपिक संघ के अध्यक्ष मीनू बेनीवाल के अनुसार राज्य के अधिकांश गांवों में बदहाल हो चुके स्टेडियमों में सबसे पहले शौचालय ठीक किए जाएंगे और फिर गांव के स्टेडियम को जाने वाले रास्तों को भी पक्का किया जाएगा। इतना ही नहीं डी-प्लान के लिए आवंटित राशि का 10 प्रतिशत खेल सुविधाओं पर खर्च करने का निर्णय लिया गया है। बहादुरगढ़ की एचएल सिटी में स्थित चैंपियंस एक्वेटिक अकेडमी में चल रही राज्यस्तरीय तैराकी प्रतियोगिता के समापन समारोह में सांसद धर्मबीर सिंह के साथ बतौर मुख्यातिथि पहुंचे हरियाणा ओलंपिक संघ के अध्यक्ष मीनू बेनीवाल ने विजेता तैराकों को मेडल और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। हरिभूमि से विशेष बातचीत में मीनू बेनीवाल ने बताया कि हरियाणा ओलंपिक संघ खिलाड़ियों को तमाम सुविधाएं देने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार जल्द ही 38वें नेशनल गेम्स के विजेता खिलाड़ियों और प्रतिभागियों को कैश अवार्ड देने जा रही है। यह कैश अवार्ड खिलाड़ियों को पिछले महीने दिए जाने थे, लेकिन किसी कारणवश रोहतक में प्रस्तावित कार्यक्रम स्थगित हो गया था। ऐसे में अब बिना देरी किए खिलाड़ियों को यह कैश अवार्ड दिए जाएंगे। एक सवाल के जवाब में उन्होंने बताया कि हरियाणा के 162 गांवों में बने राजीव गांधी खेल स्टेडियमों की हालत सुधारने का काम भी जल्द ही शुरू किया जाएगा। उन्होंने बताया कि पहले स्टेडियम में स्थित शौचालय ठीक किए जाएंगे और उसके बाद स्टेडियम को जाने वाले रास्तों को भी पक्का किया जाएगा। मीनू बेनीवाल के अनुसार डी प्लान के लिए आवंटित राशि में से 10 प्रतिशत पैसा खिलाड़ियों को खेल सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए उपयोग में लाया जाएगा। मीनू बेनीवाल ने बताया कि सितंबर महीने में हरियाणा ओलंपिक गेम्स भी शुरू होने जा रहे हैं। सांसद धर्मबीर सिंह ने कहा कि अब स्विमिंग में भी हरियाणा आगे बढ़ने लगा है। गांव और देहात से बच्चे अब तैराकी में रुचि लेने लगे हैं। उनके अनुसार मीनू बेनीवाल के हरियाणा ओलंपिक संघ का अध्यक्ष बनने के बाद आधारभूत सुधार के प्रयास तेज हो गए हैं।

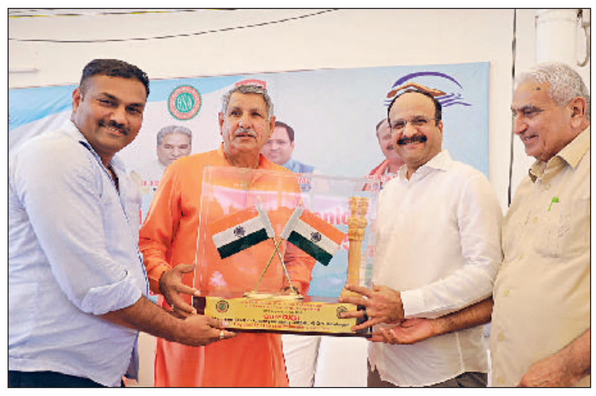

बहादुरगढ़। सांसद धर्मबीर सिंह को स्मृति चिहन देते मीनू बेनीवाल व अनिल खत्री।

खबर संक्षेप

सैन भगत जयंती कार्यक्रम 16 को

बहादुरगढ़। सूर्य कवि बाजे भगत सैन की जयंती बहादुरगढ़ में धूमधाम से मनाई जाएगी। इस उपलक्ष्य में 16 जुलाई को नाहरा, नाहरी रोड स्थित बाजे भगत सैन धर्मशाला में कार्यक्रम का आयोजन होगा। सुबह 9 बजे हवन से कार्यक्रम की शुरुआत होगी। इसके बाद भंडारा होगा। राज्य सभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि आमंत्रित किए गए हैं। जबकि पूर्व विधायक नरेश कौशिक व भाजपा नेता दिनेश कौशिक विशिष्ट अतिथि रहेंगे। बाजे भगत सैन समाज सेवा समिति की ओर से यह आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम की तैयारियां शुरू कर दी गई हैं।

इनेलो एससी सैल की बैठक कल होगी

बहादुरगढ़। इनेलो एससी सैल के जिला झज्जर पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की अहम बैठक सोमवार 14 जुलाई को बहादुरगढ़ स्थित इनेलो कार्यालय में दोपहर 1 बजे होगी। यह जानकारी देते हुए एससी सैल के जिलाध्यक्ष मास्टर सुखबीर सरोहा ने बताया कि बैठक में इनेलो प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य शीला नफे सिंह राठी, एससी सैल के प्रदेश प्रभारी वेद सिंह मुंडे और एससी सैल के प्रदेशाध्यक्ष रामेश्वर पहलवान कार्यकर्ताओं के साथ संगठन की मजबूती को लेकर विचार विमर्श करेंगे।

मोटरसाइकल चोरी के मामले में गिरफ्तार

बहादुरगढ़। सेक्टर 6 थाना पुलिस ने बाइक चोरी के मामले में आरोपी के एक सहयोगी को गिरफ्तार किया है। आरोपी को जेल भेज दिया गया है। दरअसल, बामड़ोली के निवासी सागर को आईसीआईसीआई बैंक के बाहर से बाइक चोरी हो गई थी। उसकी शिकायत पर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू की। मामले में पुलिस ने पहले चोरीशुदा बाइक सहित एक आरोपी को काबू कर जेल भेज दिया था। अब उस आरोपी के सहयोगी गौरव निवासी सांखोल को भी काबू किया गया है।

सेक्टर-6 में अवैध कब्जों पर उठाए सवाल

बहादुरगढ़। शहर के सेक्टर-6 निवासी आर्य हरिओउ्म दलाल के अनुसार यहां सरकारी जमीन पर पिछले कई सालों से अवैध दुकान धड़ल्ले से चल रही है। इसे लेकर अनेक बार नगरपरिषद व पुलिस को लिखित में शिकायत भी दी चुकी है। लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। हरिओउ्म दलाल ने बताया कि सेक्टर के बाहरी मार्गों पर तथाकथित अवैध कब्जे तोड़ने में अग्रणी रही नगर परिषद और पुलिस को यह अवैध कब्जा नहीं दिखा। उनके अनुसार अवैध कब्जा करके बनाई गई इस दुकान पर नशीले पदार्थ का भी कारोबार हो रहा है। इस पर कार्रवाई करने की बजाय आमजन द्वारा सफाई व सुरक्षा की दृष्टि से की गई बाउंड्रियों व पेड़ पौधों को तहस नहस कर दिया गया। उन्होंने प्रशासन की नीयत पर सवाल उठाए।

एचएल सिटी में स्टेट लेवल तैराकी प्रतियोगिता का समापन

झज्जर के लड़के और गुरुग्राम की लड़कियों के सिर सजा जीत का ताज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। विजेता तैराकों को पुरस्कृत करते सांसद धर्मबीर सिंह व अन्य।

बहादुरगढ़। जूनियर तैराकों को ट्रॉफी देते सांसद धर्मबीर सिंह व मीनू बेनीवाल।

शहर की चैंपियंस एक्वेटिक एकेडमी के सपोर्ट कॉम्प्लेक्स में चल रही राज्य सब जूनियर, जूनियर और सीनियर तैराकी प्रतियोगिता शनिवार को संपन्न हो गई। प्रतियोगिता में झज्जर के लड़कों और गुरुग्राम की लड़कियों ने शानदार प्रदर्शन किया। विजेता तैराकों को सांसद धर्मबीर सिंह और हरियाणा ओलंपिक संघ के प्रधान मीनू बेनीवाल ने मेडल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। ग्रुप 6 में हेतिका खत्री को बेस्ट स्विमर की ट्रॉफी भी दी गई।

शनिवार को हुए मुकाबलों में 100 मीटर ब्रेस्टस्ट्रोक में झज्जर के अतुल धनखड़ ने सिल्वर मेडल और जयवर्धन राव ने कांस्य पदक जीता। अतुल धनखड़ ने 200 मीटर ब्रेस्टस्ट्रोक में भी सिल्वर मेडल जीता था। झज्जर की टीम ने 400 मीटर मेडले रिले में गोल्ड मेडल हासिल किया। इसमें भोलेंद्र ने बैक्स्ट्रोक, अतुल धनखड़ ने ब्रेस्टस्ट्रोक, चरनजीत ने बटरफ्लाई और दक्ष फोगाट ने फ्री स्टाइल करते हुए गोल्ड मेडल जीता। झज्जर की टीम बी ने मेडले रिले में तीसरा स्थान हासिल किया है। इसमें रोहित लाठर, जयवर्धन राव, दिव्यांशु गुलिया और सक्षम ने भाग लिया था। लड़कों की 800 मीटर फ्रीस्टाइल में झज्जर के सक्षम ने गोल्ड और मयंक जून ने सिल्वर मेडल जीता। जींद के रविन्द्र ने 100 मीटर बैक्स्ट्रोक में गोल्ड और झज्जर के दक्ष फोगाट ने सिल्वर मेडल जीता। गुरुग्राम के निशांत ने 100 मीटर बटरफ्लाई में गोल्ड और सोनीपत के आयान वीर खत्री ने सिल्वर मेडल जीता। लड़कियों की 100 मीटर बटरफ्लाई में फरीदाबाद की हर्षिका ने गोल्ड और सोनीपत की प्रांजल ने सिल्वर मेडल जीता। झज्जर की समृद्धि विरमानी ने 800 मीटर फ्रीस्टाइल में गोल्ड और फरीदाबाद की हर्षिका ने सिल्वर मेडल जीता।

सोनीपत की भारती ने 100 मीटर बैक्स्ट्रोक में गोल्ड और गुरुग्राम की वीरा ने सिल्वर मेडल जीता। सब जूनियर ग्रुप 3 के 100 मीटर फ्रीस्टाइल में गुरुग्राम के पूर्व डबास ने गोल्ड और आर्यवीर ने सिल्वर मेडल जीता। वहीं 100 मीटर बैक्स्ट्रोक में गुरुग्राम के हिमाक्ष ने गोल्ड और पलवल के रुद्राक्ष ने सिल्वर मेडल जीता। जबकि 100 मीटर ब्रेस्टस्ट्रोक में गुरुग्राम के आयाश ने गोल्ड और आर्यवीर ने सिल्वर मेडल जीता। लड़कियों की बटरफ्लाई 100 मीटर में अंबाला की पावनी ने गोल्ड और फरीदाबाद की प्राची ने सिल्वर मेडल जीता। सोनीपत की मीरा ने 100 मीटर फ्रीस्टाइल में गोल्ड और फरीदाबाद की प्राची ने सिल्वर मेडल जीता। झज्जर की पूर्वी सहरावत ने 100 मीटर बैक्स्ट्रोक में गोल्ड और फरीदाबाद की प्राची ने सिल्वर मेडल जीता।

मीनू बेनीवाल का स्वागत किया

हरियाणा तैराकी संघ के महासचिव अनिल खत्री ने सांसद धर्मबीर सिंह और एचओए के अध्यक्ष मीनू बेनीवाल का पगड़ी बांधकर स्वागत किया और स्मृति चिह्न देकर सम्मान किया। इस दौरान आरएसएस के जिला प्रचारक राहुल, डॉ सुशील राणा, रवि सिंगारी, सुरेश जून, सुनील खत्री, बलवान पहलवान, सत्यनारायण शर्मा, साई जाधव, पदमपाल, विशाल, विकास, हर्ष कौशिक, प्रकाश कादयान, एके पंडित, साहिल, रविंद्र, राम दुल, रामस्वरूप शर्मा, चेतन, अनिल शर्मा, विनोद, विजयपाल, संदीप और कृष्णमुरारी आदि मौजूद रहे।

करनाल की पूजा का शव माइनर में मिला था

बहादुरगढ़। अस्पताल में मौजूद पूजा के परिजन।

मृतका पूजा का फाइल फोटो।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

- 9 जुलाई की सुबह लापता हुई थी पूजा

रोहद से गुजर रही एनसीआर में मिले महिला के शव की शिनाख्त हो गई है। मृतका महिला करनाल की रहने वाली थी। तीन दिन पहले अपने घर से सैर के लिए निकली थी। मानसिक परेशानी से तंग आकर महिला द्वारा माइनर में छलांग लगाने की बात सामने आई है। लगभग 130 किलोमीटर दूर यहां माइनर से उसका शव बरामद हुआ। पुलिस ने परिजनों के बयान के बाद पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू करा दी है। मृतका की पहचान करीब 35 वर्षीय पूजा के रूप में हुई है। पूजा पत्नी दीपक करनाल की रहने वाली थी। गत 9 जुलाई की सुबह वह घर से सैर के लिए निकली थी लेकिन वापस नहीं लौटी। इसके बाद परिजनों ने उसकी तलाश शुरू की। कैमरे आदि खंगाले तो उन्हें एक ई रिक्शा में पूजा जाती नजर आई। फिर उस ई रिक्शा वाले को ढूंढा तो पता चला कि उसने पूछा को पार्क में छोड़ था। इस दौरान उन्हें पता चला कि पूजा ने वहां नहर में छलांग लगाई है। तब से सर्च अभियान चल रहा था। इसी बीच 11 जुलाई को यहां रोहद से गुजर रही गुरुग्राम माइनर में एक महिला का शव बरामद हुआ। एक तरफ यहां की पुलिस महिला की शिनाख्त के प्रयास में थी तो वहीं दूसरी तरफ पूजा के परिजन भी उसे तलाश रहे थे। एक गोताखोर ने बहादुरगढ़ पुलिस से संपर्क किया तो उसे बताया गया कि यहां एक महिला का शव मिला है। महिला की फोटो भेजी गई तो परिजनों को शंका हुई। इसके बाद करनाल से परिजन यहां आए और शव की शिनाख्त कर ली। इसके बाद पुलिस ने पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू कराई। पूजा दो बच्चों की मां थी। बताते हैं कि वह मानसिक रूप से परेशान थी। इसलिए उसने यह कदम उठाया। बाकी असल वजह जांच का विषय है। इससे पहले करनाल में उसकी गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज हो चुकी है।

युवक का पर्स मोबाइल लेकर भागे, फिर खाते से हजारों रुपये निकाले

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

- एटीएम बूथ व आसपास सीसीटीवी फुटेज चेक की जा रही : पुलिस

रोहतक-दिल्ली रोड पर एक युवक के साथ वारदात हो गई। यहां एक युवक से मोबाइल व पर्स लेकर दो शातिर चंपत हो गए। इसके बाद डेबिट कार्ड के जरिये से 57 हजार रुपये निकाल लिए। पीड़ित की शिकायत पर सिटी पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

वारदात चंदन के साथ हुई है। बिहार मूल का चंदन यहां लाइनपार के सुभाष नगर में रहता है और एक फुटवियर कंपनी में काम करता है। चंद दिनों पहले उसके साथ वारदात हुई थी। अब शिकायत पर केस दर्ज हो सका है।

चंदन का कहना है कि रात करीब दस बजे वह रोहतक दिल्ली रोड पर पुराना बस स्टैंड के निकट स्थित पीएनबी के एटीएम बूथ में गया था। इस दौरान बूथ में दो युवक आ गए। एटीएम पिन चेंज करने के बहाने वह मुझसे बातचीत करने लगे। जिसके बाद मैंने उनको अपना एटीएम का पिन बदलकर दिखाया। जब मैं एटीएम बूथ से बाहर निकलकर जाने लगा तो पीछे पीछे दोनों मेरे पास आ गए। इस दौरान एक लड़के ने बहला फुसलाकर मुझ से मोबाइल ले लिया और दूसरे ने मेरी पैंट की जेब से पर्स निकाल लिया। पर्स में डेबिट, पेन कार्ड, आधार कार्ड सहित अन्य दस्तावेज थे। फिर वे लड़के मेरा मोबाइल और पर्स लेकर भाग गए।

मैंने पीछा किया लेकिन वे हाथ नहीं आए। इसके बाद अपने घर चला गया। अगले दिन बैंक में गया तो पता चला कि खाते से 57 हजार रुपये निकल गए हैं।

पुलिस को शिकायत दी

इसके बाद पुलिस को शिकायत दी। शिकायत पर पुलिस हरकत में आई और जांच शुरू की। पुलिस ने उसकी शिकायत पर अज्ञात आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। मामले की तह तक जाने के लिए एटीएम बूथ व आसपास सीसीटीवी फुटेज चेक की जा रही है। जल्द से जल्द वारदात सुलझाने की बात कही जा रही है।

प्रधानी के 3 साल पूरे होने पर आज लगेगा रक्तदान शिविर

बहादुरगढ़। नगर परिषद बहादुरगढ़ का तीन साल का कार्यकाल पूरा होने पर चेयरपर्सन सरोज राठी द्वारा रविवार 13 जुलाई को रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा।

बहादुरगढ़। सरोज राठी

पूर्व चेयरमैन कर्मवीर राठी के कार्यालय पर रविवार सुबह 9 बजे हवन होगा। उसके उपरांत 10 बजे से सायं 4 बजे तक रक्तदान शिविर चलेगा। चेयरपर्सन सरोज राठी ने बताया कि शिविर में रक्त का संचय रेडक्रॉस सोसायटी झज्जर द्वारा किया जाएगा। शिविर में पूर्व मंत्री मनीष ग्रोवर, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सतीश नांदल, जिलाध्यक्ष विकास वाल्मीकि, मुंडका के विधायक गजेंद्र दराल, नजफगढ़ से विधायक नीलम कृष्ण पहलवान समेत अन्य गणमान्य लोग रक्तदाताओं को प्रोत्साहित करेंगे।

शिक्षकों को पढ़ाने के नए तरीके बताए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। मीटिंग के दौरान उपस्थित शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

एचडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय साल्हावास में शनिवार को कैपेसिटी बिल्ड़िंग प्रोगाम की एक दिवसीय इन हाऊस मीटिंग का आयोजन किया गया। मीटिंग में विद्यालय की रिसोर्स पर्सन नीलम कुमारी ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सीबीएसई शिक्षा प्रणाली से विद्यालयों में कैसे पढ़ाया जाना चाहिए और विद्यार्थियों को क्या सीखना चाहिए। उन्होंने कहा कि एनसीएफ तीसरी से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक परिदृश्य को नया आकार देते हुए भाषा सीखने, विषय संरचना और पर्यावरण शिक्षा में बदलाव पेश करती है। उन्होंने अध्यापकों को सरल व सहज ढंग से उदाहरण सहित प्रत्येक पहलुओं से अवगत कराते हुए बच्चों का सर्वांगीण विकास, उनको पढ़ाने का ढंग, विषय को रूचिकर बनाना, कल्चर, विजन, उद्देश्य आदि की जानकारी दी। इस दौरान शिक्षकों द्वारा पूछे गए अनेक प्रश्नों के जवाब भी दिए गए। इस मौके पर एचडी ग्रुप के डायरेक्टर रमेश गुलिया, सचिव विशाल नेहरा, हेमंत गुलिया व प्राचार्य सतबीर सिंह सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

कटरा एक्सप्रेस-वे के साथ एचटी लाइन के टावरों से चोरों ने काट ली लाखों की तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

इलाके में चोरी की वारदात बढ़ रही हैं। अब चोरों ने दिल्ली कटरा एक्प्रेस वे के साथ एचटी लाइन के टावरों की तारों को निशाना लिया। चोर लाखों रुपये की तार काटकर ले गए। इस संबंध में कंपनी के अधिकारियों की ओर से पुलिस को शिकायत दी गई है।

पुलिस ने मामले में जांच शुरू कर दी है। रोहतक के निवासी सोमबीर का कहना है कि वह केसीसी कंपनी में लाइजनिंग अधिकारी है। उनकी कंपनी दिल्ली-कटरा एक्सप्रेस वे का निर्माण कर रही है। एक्सप्रेस वे साथ बिजली के टावरों के बीच से किसी ने तार काट ली। गत 11 जुलाई की सुबह जब साइट पर आए तो वारदात का पता चला।

करीब 150 मीटर की सात तारें काटी गई हैं। इस वजह से कंपनी को करीब चार लाख रुपये की आर्थिक हानि हुई है। वहीं काम भी प्रभावित हुआ है। पुलिस मामले में जांच करे।

उधर, पुलिस का कहना है कि शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर लिया है। जांच की जा रही है।

नव पदोन्नत प्राचार्यों को दिया जा रहा प्रशिक्षण

- विभिन्न प्रकार की भ्रांतियों को बहुत सलीके से दूर किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। प्रशिक्षण के दौरान नव पदोन्नत प्राचार्यों को संबोधित करते हुए प्रशिक्षक। फोटो : हरिभूमि

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान माछरौली में नव पदोन्नत प्राचार्यों को बारह दिवसीय प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

प्रशिक्षण के छठे दिन प्राचार्य डाइट राजेश कुमार ने रोल एवं रिस्पांसिबिलिटी ऑफ डीडीओ, अकाउंट ऑफिसर राजेश मालिक ने हरियाणा सिविल सेवा रूल 2016 तथा अकाउंट ऑफिसर हरीश दुग्गल ने चिकित्सा प्रतिपूर्ति बारे विस्तार से जानकारी दी। प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रकार की भ्रांतियों को बहुत सलीके से दूर किया। प्रशिक्षण के दौरान आईएफआईसी विंग इंचार्ज सुनील कुमार, रेणु एवं कुलदीप सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

बीती 23 जून को हरिद्वार से रेवाड़ी के बुड़ौली गांव के लिए चला था 49 वर्षीय विक्रम

सपाटा कांवड़ लाकर युवाओं को योगाभ्यास करने व नशे से दूर रहने का संदेश दे रहा शिवभक्त विक्रम

झज्जर। सपाटा कांवड़ लेकर शहर के अंबेडकर चौक से निकलते हुए शिवभक्त विक्रम। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

युवाओं को हर प्रकार के नशे से दूर रहने व स्वस्थ रहने के लिए नियमित व्यायाम करने का संदेश देने के उद्देश्य से रेवाड़ी जिले के बुडौली गांव निवासी शिवभक्त विक्रम हरिद्वार से सपाटा कांवड़ लेकर शनिवार को शहर पहुंचा। अपने सहयोगियों के साथ वे सड़क पर सपाटे लगाते हुए अपना सफर तय कर रहे हैं।

रोजाना करीब पांच किमी चल रहे

अल्पविराम के लिए शहर की गुर्जर धर्मशाला में ठहरे करीब 49 वर्षीय विक्रम धनखड़ ने बताया कि वे गांव में कुश्ती अकेडमी चलाते हैं। उन्हें हरिद्वार से कांवड़ लानी थी तो उनके मन में युवाओं को नशे के प्रति जागरुक करने का सुझाव आया। इसी के चलते उन्होंने सपाटा कांवड़ लाने का फैसला लिया। उनका मानना है कि जब वे अधेड़ उम्र में सपाटा मारते हुए कांवड़ लेकर आ सकते हैं तो युवाओं में इतना जोश होना चाहिए कि वे स्वस्थ रहने के लिए कम से कम घर पर रहकर ही नियमित योगाभ्यास करें। वे बीती 23 जून को हरिद्वार से कांवड लेकर चले थे। बीच में जहां उन्होंने 15 से 18 किलोमीटर तक की दूरी तय की वहीं अब वे रोजाना करीब पांच किलोमीटर चल रहे हैं।

झज्जर। बाबा कांशी गिरी मंदिर में भजनों पर भाव विभोर होकर नृत्य करतीं महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

भोले डमरू बजा दो एक बार हमारे हरी कीर्तन में..भजन पर भाव विभोर श्रद्धालु

हरिभूमि न्यूज. झज्जर : बाबा कांशी गिरी महाराज मंदिर में श्री शिव महापुराण कथा का आयोजन किया गया। भगवान गणेश की पूजा अर्चना के साथ शुरू हुई। शिव पुराण की कथा हमें जीवन जीने की कला सिखाती है। यह बात पंडित पवन कौशिक ने सावन मास के अवसर पर शिवपुराण कथा के पहले दिन की कथा का व्याख्यान करते हुए कही। उन्होंने कहा कि माता सती भगवान शिव के मना करने पर भी प्रजापति दक्ष के यज्ञ में पहुंची। बिना बुलाए अपने पिता के घर गईं। अपमान का सामना न करते हुए अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। शिव पुराण की कथा हमें उपदेश देती है कि जीवन साथी और अपने गुरु पर विश्वास व श्रद्धा होनी जरूरी है। इस दौरान संगीता वर्मा, आशा ग्रोवर, शशी खत्री, इंदू भूगड़ा ने भोले डमरू बजा दो एक बार हमारे हरी कीर्तन में.. आशा नागपाल ने नगरी हो अयोध्या सी रघुकुल सा घराना हो.. नारायणी सरदाना ने बाबा तेरी चरणों की गर धूल जो मिल जाए.. भजन प्रस्तुत कर श्रद्धालुओं को मंत्रमुध कर दिया।

पुलिस आयुक्त ने कांवड सेवा शिविरों में सीसीटीवी लगवाने के दिए निर्देश

झज्जर। कांवड़ियों की सुरक्षा व कांवड़ यात्रा को सुचारू संपन्न कराने के मद्देनजर जिला पुलिस द्वारा व्यापक प्रबंध किए गए हैं। जिला पुलिस आयुक्त डॉक्टर राजश्री सिंह ने बताया कि सभी थाना प्रबंधकों को कांवड़ यात्रा को सुरक्षित संपन्न कराने के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। सुरक्षा के मद्देनजर कांवड़ यात्रा के मार्ग पर 24 घंटे पीसीआर तैनात रहेगी। महिला कांवड़ियों की सुरक्षा को मद्देनजर रखते हुए पर्याप्त संख्या में महिला पुलिस कर्मचारियों को भी तैनात किया गया है। जिस मार्ग पर कांवड़िए चल रहे होंगे उस पर गति रोधक लगाकर वाहनों को धीमी गति से चलाया जाएगा। सड़क पर जहां भी कावड़ियों के क्रॉसिंग पॉइंट है। उन स्थानों को चिन्हित करके रस्से से व त्रिकोण लगवाए जाए। आपात समय के लिए एक एंबुलेंस को रिजर्व रखा जाए। उन्होंने कहा कि कांवड़ शिविर में कहीं भी बिजली की कोई भी तार का जोड़ खुला नहीं होना चाहिए। शिविर में सिंगल यूज प्लास्टिक का इस्तेमाल न किया जाए। कांवड़ शिविर सड़क के केवल बाई तरफ लगने चाहिए। कांवडिए सड़क के बाई तरफ चलें। वाहन चालक अपने वाहन को धीमी गति से चलाएं। शिविर के आयोजक कांवड़ शिविरों में सीसीटीवी लगवाएं और महिला व पुरुषों के लिए अलग-अलग शौचालय की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

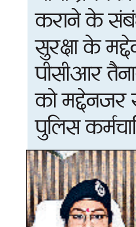

डॉक्टर राजश्री सिंह, जिला पुलिस आयुक्त।

एआई अब केवल विशिष्ट ही नहीं लगभग हर क्षेत्र में अपनी पैठ बढ़ा रहा है। लेकिन इसके पॉजिटिव के बजाय मिसयूज होने की आशंका से पूरी दुनिया के लोग चिंतित हैं। यही वजह है कि एआई यूज करने को लेकर कुछ ग्लोबल रूल्स-रेग्यूलेशंस डिसाइड करने के उद्देश्य से जापान में सम्मेलन होने जा रहा है। इस सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य और चुनौतियों पर एक नजर।

अब जल्द डिसाइड होंगे एआई यूज करने के रूल्स

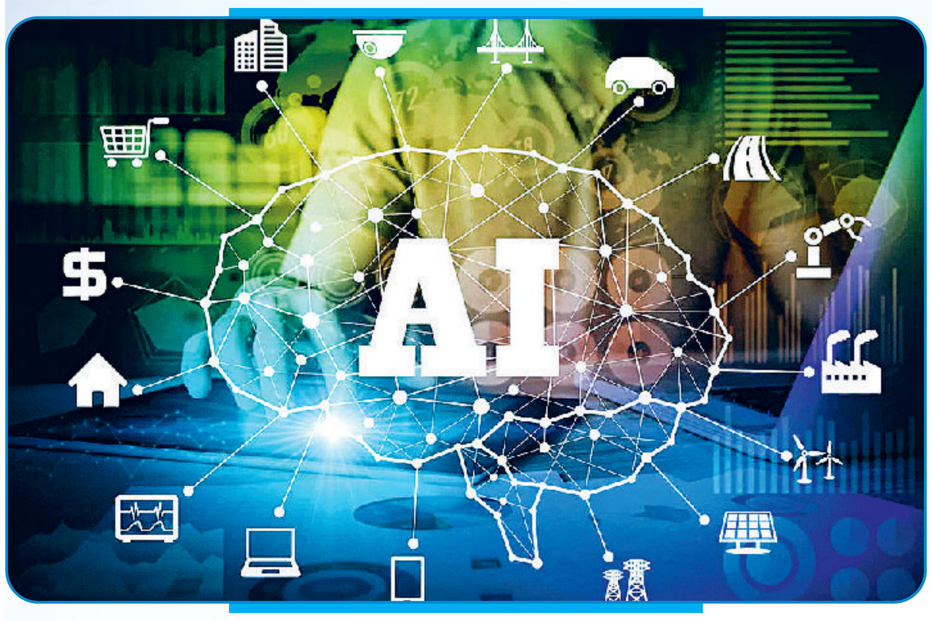

कवर स्टोरी

लोकमित्र गौतम

आगामी 27 से 29 जुलाई 2025 तक टोक्यो (जापान) में एआई (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) को लेकर तीन दिवसीय सम्मेलन होने जा रहा है। उम्मीद की जा रही है कि इस सम्मेलन में मानव समाज के लिए एआई के इस्तेमाल की निर्णायक दिशा तय होगी।

पहले भी होते रहे हैं प्रयास

साल 2010 से ही पश्चिमी दुनिया में एआई के मानव जीवन में इस्तेमाल को लेकर जबर्दस्त नैतिक दुविधा का वातावरण रहा है। इसलिए सन 2010 में दुनिया भर की सरकारें, अंतरराष्ट्रीय संगठन और शोध संस्थान मानव केंद्रित एआई के इस्तेमाल के बीच सिद्धांतों की दिशा तय करने के लिए लगातार विचार और विमर्श की एक श्रंखला प्रसारित करते रहे हैं। साल 2010 से शुरू हुए इस व्यापक विचार-विमर्श ने 2021 में यूरोपीय आयोग के उस आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस एक्ट का मसौदा प्रकाशित करने तक के सफर को पूरा किया, जहां से यह तय होना शुरू हुआ कि अंततः एआई को मानव समाज के लिए वर्गीकृत कर लिया जाए और इसकी सुरक्षा, पारदर्शिता तथा जवाबदेही को अलग-अलग दायित्वों के साथ जोड़ा जाए। अमेरिका में 2022 का एल्गोरिद्म जवाबदेही अधिनियम, फरवरी 2022 में कांग्रेस के दोनों सदनों में पेश किया गया था। इसके बाद जून 2022 में कनाडा ने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और डेटा एक्ट का प्रस्ताव रखा, जिसमें उच्च प्रभाव वाली एआई प्रणालियों के बारे में जोखिम प्रबंधन और सूचना प्रकटीकरण अनिवार्य कर दिया गया। जापान ने 2023 के जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान एआई के लिए मानव केंद्रित दृष्टिकोण पर चर्चा करने की उम्मीद की और अब अंततः जापान में ही आगामी जुलाई माह में तीन दिनों तक एआई को लेकर जो एक विशद सम्मेलन आयोजित हो रहा है, उसका उद्देश्य एआई के इस्तेमाल की दिशा तय करना है।

इन मुद्दों पर होगी चर्चा

वास्तव में यह सम्मेलन मानव केंद्रित एआई सिद्धांतों की समीक्षा करेगा- मसलन वैश्विक एआई नीति ढांचों में गहराई से विचार-विमर्श किया जाएगा, ताकि मानव गरिमा, विविधता, समावेश और पारदर्शिता मुख्य मुद्दे के रूप में गहन विचार-विमर्श के केंद्र में रहें। यूरोप, जापान, ओईसीडी तथा जी-7 जैसे संगठनों के बीच विचारों के आदान-प्रदान पर जोर होगा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि एआई वैश्विक रूप से अनुकूल और एकीकृत दिशा ले सके। इस सम्मेलन में सिर्फ सिद्धांतों तक बात सीमित नहीं रहेगी बल्कि तकनीकी सुरक्षा पर भी फोकस होगा। तकनीकी जोखिम जैसे बायस, एलाइनमेंट, आउटपुट के स्पष्टीकरण इत्यादि की भी केंद्रीय चर्चा होगी। सबसे ज्यादा इस बात पर जोर दिया जाएगा कि इंसानी समाज के नजदीकी नैतिक मुद्दों के साथ-साथ भविष्य की चिंताओं जैसे मानव-समान बुद्धिमत्ता और चेतना जैसी जटिल स्थितियां भी विचार में रहेंगी। अगर यह कहा जाए कि अंततः यह सम्मेलन एआई के इस्तेमाल की निर्णायक दिशा तय करेगा या उस दिशा की ओर आगे बढ़ेगा, तो गलत नहीं होगा।

कुछ नियम होंगे निर्धारित

यह जरूरी नहीं है कि इस सम्मेलन के बाद एआई से संबंधित कोई वैश्विक नियम लागू हो ही जाए कि एआई का इस्तेमाल इस नियम के तहत किया जाएगा। हो सकता है अभी यहां तक बात न पहुंचे, लेकिन इस सम्मेलन से यह तय होगा कि एआई किन क्षेत्रों को प्रोत्साहित करेगी। मसलन स्वास्थ्य, शिक्षा, सतत विकास, जैसे मानव हितैषी क्षेत्रों में एआई का किस तरह ज्यादा से ज्यादा सकारात्मक इस्तेमाल करके मानव समाज को बेहतर बनाया जाए। इस सम्मेलन में यह भी तय होगा कि एआई का उपयोग हथियारों को घातक बनाने, इंसान की सूक्ष्म निगरानी करने या उसके विरुद्ध अमानवीय प्रयोगों में न किया जाए। इसके लिए सिर्फ रोक-टोक भर काफी नहीं होगी बल्कि स्पष्ट रूप से नियम बनाए जाएंगे और कड़े से कड़े नैतिक सवालों से उन्हें घेरा जाएगा।

एआई विकास की दिशा तय होगी

सवाल है आखिर किन मूल्यों के आधार पर भविष्य में एआई का विकास हो और उसके इस्तेमाल की दिशा तय हो? सुनिश्चित रूप से अभी तक इस सम्मेलन की जो विमर्शगत थीम तैयार हुई है, उसके मुताबिक इस सम्मेलन में एआई की पारदर्शिता, उसकी जवाबदेही, मानव गरिमा और अधिकारों का सम्मान तथा विविधता व समावेशिता के नियमों पर कड़ाई से एआई को खरा उतरना पड़ेगा। इस बात पर पूरी दुनिया के बीच एक निर्णायक समझ बनेगी। यह सम्मेलन एआई तकनीकी विकास की भी दिशा तय करेगा। मसलन, ऐसी तकनीक विकसित होगी, जिसका उद्देश्य मानव समाज के व्यापक हित में हो और जिसके विकास का निर्णय समझाया जा सके। इस सम्मेलन में बायस फ्री एआई यानी ऐसी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के प्रति सहमति बनेगी, जिसमें पहले से कोई पूर्वग्रह न हो और हां, अंतिम रूप से यह तय किया जाएगा कि एआई का अंतिम नियंत्रण मनुष्य के हाथ में रहे, एआई के हाथ में मनुष्य का नियंत्रण न जाए। यह सम्मेलन विभिन्न देशों, विभिन्न टेक्नो कंपनियों और समाज के बीच क्या सही है, क्या गलत है, इस पर अंतिम रूप से अपनी निर्णायक सोच विकसित करेगा ताकि भविष्य में एआई का इस्तेमाल बेतरतीब न हो बल्कि यह नैतिक और जिम्मेदारी के नियंत्रण में रहे। कुल मिलाकर यह सम्मेलन मानव केंद्रित एआई विकास, वैश्विक नैतिक दिशा निर्देश, तकनीकी सुरक्षा और एआई को लेकर एक दीर्घकालिक समझ को विकसित करेगा। *

कई वजहों से महत्वपूर्ण होगा यह सम्मेलन

अगर कहा जाए कि होने वाला यह सम्मेलन मानव समाज के लिए अंततः एआई के इस्तेमाल की दिशा तय करेगा, इसके लिए कानून भले न बनाए, लेकिन नीति, प्राथमिकता और नैतिक दिशा तय करेगा, तो गलत नहीं होगा। वास्तव में यह सम्मेलन इसीलिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि- इसमें नीति और नवाचार के बीच सेतु बनाया जाएगा। इस सम्मेलन में एआई को लेकर जारी वैश्विक दिशा में जापान की अपनी भागीदारी बढ़ेगी। तकनीकी संरक्षण और नैतिक शासन के दृष्टिकोण से जापान को भी केंद्रीय भूमिका निभाने के लिए अवसर इस सम्मेलन के जरिए हासिल होगा। साथ ही इस सम्मेलन में स्वतंत्र अनुसंधानों और मल्टी स्टेकहोल्डरों की दृष्टि साझी होगी। मतलब यह कि यह सम्मेलन सिर्फ सरकार या तकनीकी विशेषज्ञों तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि उद्योग जगत, शिक्षाविद और नागरिक समाज के प्रतिनिधि भी इस सम्मेलन के जरिए इसमें निर्णायक हस्तक्षेप करेंगे।

फ्यूचर प्लानिंग / शैलेंद्र सिंह

बहुत जल्द अंतरिक्ष में होगा इंडियन स्पेस स्टेशन

फिलहाल आईएसएस और चीन के स्पेस स्टेशन अंतरिक्ष में एक्टिव हैं। इनके अलावा जल्द ही भारत का अपना स्पेस स्टेशन भी स्पेस में पहुंच जाएगा। इसकी प्लानिंग और खासियतों पर एक नजर।

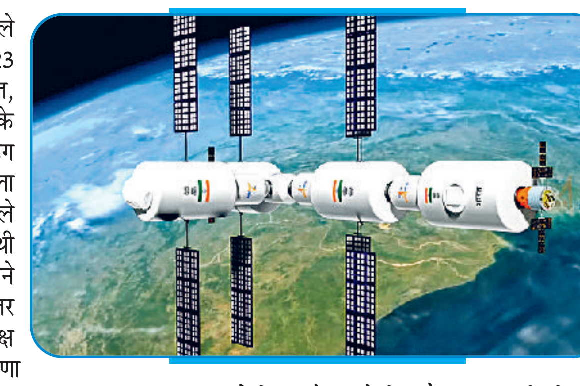

अब से दो वर्ष पहले 23 अगस्त 2023 को जब भारत, चंद्रयान-3 को चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग कराने वाला दुनिया का पहला देश बना था, उसके पहले किसी को यह उम्मीद नहीं थी कि भारत जैसा देश भी आने वाले एक दशक के भीतर स्पेस में अपना अंतरिक्ष स्टेशन बनाने की भी घोषणा कर सकता है। लेकिन जब हम चांद पर सॉफ्ट लैंडिंग कराने में सफल हुए, उसके बाद यह घोषणा की थी। अब किसी को इस बारे में आशंका नहीं रह गई है कि निकट भविष्य में भारत, अंतरिक्ष में अपना स्पेस स्टेशन बना लेगा।

तीन साल बाद होगा लांच: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने साल 2028 तक भारत का पहला अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन लांच करने का ऐलान किया है। उसके मुताबिक 2028 में लांच होने वाला मॉड्यूल एक रोबोटिक मॉड्यूल होगा यानी, एक ऐसा उपग्रह जहां हम डॉक कर सकते हैं, प्रयोग कर सकते हैं और वापस आ सकते हैं। लेकिन इंसान का अंतरिक्ष स्टेशन पर जाना साल 2035 के बाद ही संभव होगा।

कुछ ऐसा था पहला आईएसएस: अंतरिक्ष स्टेशन (एसएस) पृथ्वी की निचली कक्षा में एक मॉड्यूलर स्पेस स्टेशन या रहने योग्य कृत्रिम उपग्रह होता है। दुनिया का पहला अंतरिक्ष स्टेशन साल्युट 1 था, जिसे तत्कालीन सोवियत संघ (अब मुख्य तौर पर रूस) ने 19 अप्रैल 1971 को कजाकिस्तान के बायकोनूर कॉसमोड्रोम से लांच किया था। यह अंतरिक्ष स्टेशन करीब 20 टन वजनी और बेलनाकार था। इसकी लंबाई 12 मीटर और चौड़ाई 4.25 मीटर थी। सिंगल डॉकिंग पोर्ट वाला यह स्टेशन, तीन कार्यशील खंडों में विभाजित था। इसके भेजने का मुख्य मकसद लंबी अवधि की अंतरिक्ष यात्रा में इंसान के शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना और अंतरिक्ष से पृथ्वी की निरंतर तस्वीरें लेना था।

दुनिया का पहला एसएस साल्युट-1

अभी एक्टिव हैं दो एसएस: अभी तक पृथ्वी की निचली कक्षा में पूरी तरह से कार्यरत दो अंतरिक्ष स्टेशन मौजूद हैं। पहला आईएसएस (अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन) और दूसरा चीन का तियांगोंग अंतरिक्ष स्टेशन यानी टीएसएस। वर्तमान में जो कार्यरत अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन है, उसे 20 नवंबर 1998 को लांच किया गया था। अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा के नेतृत्व में संचालित यह स्पेस स्टेशन एक बहुराष्ट्रीय सहयोग से संचालित परियोजना है। इसमें 5 देशों की अंतरिक्ष एजेंसियां भागीदार हैं। अमेरिका की नासा (नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन), रूस की रोस्कोस्मोस, जापान की जेएएक्सए (जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी), यूरोप की ईएसए (यूरोपीय स्पेस एजेंसी) और कनाडा की सीएसए (कनाडियन स्पेस एजेंसी)। इस स्पेस स्टेशन में छह भाग हैं, जिसमें दो बाथरूम, एक जिम और एक 360 डिग्री का दृश्य दिखाने वाली खिड़की। नासा के मुताबिक इस अंतरिक्ष स्टेशन की माप करीब 109 मीटर है। इसे 1984 और 1993 के बीच डिजाइन किया गया था। साल 2000 से इस अंतरिक्ष स्टेशन में दुनिया के अलग-अलग देशों के एस्ट्रोनॉट्स ने रहना शुरू किया। ये अंतरिक्ष यात्री यहां रहकर दूसरे ग्रहों की स्टडी और विभिन्न तरह के दूसरे प्रयोग करते हैं। मौजूदा आईएसएस धरती से करीब 400 किलोमीटर की ऊंचाई पर रहकर पृथ्वी के चक्कर काटता है। इसकी रफ्तार 28 हजार किलोमीटर प्रतिघंटा है, जिससे यह महज 90 मिनट में धरती का एक चक्कर पूरा कर लेता है।

आईएसएस के अलावा अंतरिक्ष में जो दूसरा अंतरिक्ष स्टेशन मौजूद है, वह चीन का तियांगोंग है। यह एक स्थाई अंतरिक्ष स्टेशन है, जिसकी लंबाई 55 मीटर या 180 फीट है। इसमें तीन मॉड्यूल हैं, जिसमें एक कोर मॉड्यूल है, जहां छह अंतरिक्ष यात्री रह सकते हैं। इसके अलावा चीन के इस अंतरिक्ष स्टेशन में 3,884 क्यूबिक फुट या 110 क्यूबिक मीटर के दो मॉड्यूल हैं। चीन का अंतरिक्ष स्टेशन, नासा के नेतृत्व वाले इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन से छोटा है। यह पृथ्वी से 450 किमी तक कक्षीय ऊंचाई पर काम करता है।

ऐसा होगा इंडियन स्पेस स्टेशन: इसरो ने अपनी इस महत्वाकांक्षा का खुलासा साल 2019 में ही कर दिया था और तब ही ऐलान भी किया था कि अगले 20 से 25 सालों में भारत का अंतरिक्ष में अपना बेस होगा। कहने का मतलब यह कि अंतरिक्ष स्टेशन इसरो के फ्यूचर प्लान में काफी पहले से शामिल रहा है। इसरो के मुताबिक प्रस्तावित अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मॉड्यूल का वजन 8 टन होगा, जिसका वजन बाद में 20 टन का भी हो सकता है। इसमें एक साथ 4 से 5 एस्ट्रोनॉट्स रह सकेंगे और इसे पृथ्वी की सबसे निचली कक्षा में रखा जाएगा, जिसे एलईओ (लोअर अर्थ ऑर्बिट) कहते हैं और यह धरती से 400 किलोमीटर दूर स्थित है। भारत अपने गगनयान मिशन को भी पृथ्वी के लोअर आर्बिट में ही भेजने वाला है, वहीं पर इसरो का अपना स्पेस सेंटर भी स्थापित होगा। भारत सरकार ने इसके लिए जरूरी फंड कई साल पहले जारी कर दिया था। *

गजल

अवतार सिंह अक्षरजीवी

सच बोलने वाले

सच बोलने के खतरे बहुत हैं
सच बोलने वाले मरते बहुत हैं
सब जानते हैं फिर भी सच
कहते हैं कम, डरते बहुत हैं
न देखा न सुना जाता है ये
हौव्वा है इससे छुपते बहुत हैं
गिर गया तो उठाता नहीं कोई
सच से लोग हिचकिचाते बहुत हैं
ठहाकों में कमी छुपाते हैं लोग
सच कहने वाले पे हंसते बहुत हैं
सच बोलने वाले गिनती के हैं बस
झूठ पर जीने वाले मिलते बहुत हैं

लघुकथा / गीता सिंह

बांझिन का घर

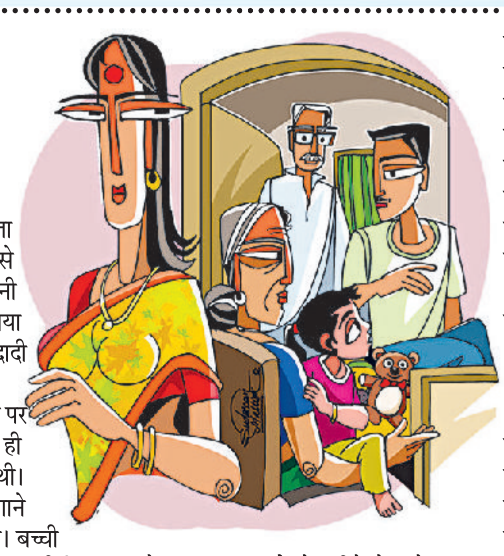

सुजाता अपने सास-ससुर के लिए चाय-नाश्ता बना रही थी, जो बस थोड़ी देर पहले ही आरा से पटना आए थे। सुजाता के सास-ससुर अपनी पोती से मिलने के लिए अकसर आरा से पटना आ जाया करते थे। बेटे की शादी के काफी सालों बाद उन्हें दादा-दादी बनने का सौभाग्य जो प्राप्त हुआ था।

रविवार की छुट्टी थी। सुजाता का पति समीर आज घर पर ही था। वह सोफे पर बैठा हुआ टीवी देख रहा था। पास ही तीन साल की बेटी बिट्टो भी अपने खिलौनों से खेल रही थी। बीच-बीच में वह अपने पापा से टीवी पर कार्टून चैनल लगाने की जिद्द भी करती, लेकिन समीर बिट्टो को झिड़क देता। बच्ची डरकर शांत बैठ जाती या रोते हुए अपनी मम्मी के पास पापा की शिकायत लेकर पहुंच जाती। सुजाता, बेटी को कभी प्यार तो कभी गुस्से से समझाकर वापस खेलने के लिए भेज देती।

तभी सुजाता ने समीर को आवाज लगाई, 'चाय-नाश्ता तैयार हो गया है। टीवी बंद कर मम्मी-पापा के कमरे में चले जाइए। आप भी वहीं बैठकर उनके साथ नाश्ता कर लीजिए।'

समीर अनमने मन से टीवी बंद करके दूसरे कमरे में मम्मी-पापा के पास चला गया। कमरे में घुसते ही वहां का हाल देखकर झल्लाते हुए बोला, 'बिट्टो तो घर में कोई सामान जगह पर नहीं रहने देती। सब सामान इधर-उधर फैलाती रहती है। बेड का हाल तो देखो जरा, कितनी बुरी हालत हो रही है। उफ्फ! बेडशीट पर इतनी सिलवटें हैं, कितनी गंदी हो गई है। कभी घर साफ ही नहीं रहता।'

इस बात पर सुजाता कुछ बोलती, उससे पहले उसकी सासू मां बोल पड़ीं, 'अरे, बच्चे वाला घर है, किसी बांझ-बांझिन का घर थोड़ी न है, जो हरदम साफ रहेगा।' उन्होंने ऐसा बोलकर अपने बेटे को तो शांत कर दिया, किंतु सुजाता के भीतर घोर अशांति फैला दी। उसका मन अशांत होता भी क्यों नहीं? आखिर सुजाता के मन-मस्तिष्क पर जमे कुछ शब्दों के अर्थ आज सामने जो थे।

बरसों से करीने से सजे साफ-सुथरे घर रखने पर तब जो तारीफ सुजाता को दूसरों से मिला करती थी, सासू मां मौजूद होने पर थोड़ा मुस्कुराते हुए हमेशा यही बात बोला करती थीं, 'घर तो साफ रहेगा ही...।'

सासू मां इतना बोलकर चुप हो जाती थीं। सुजाता को तब लगता कि शायद सासू मां उसकी तारीफ में ऐसा बोला करती हैं। ...लेकिन आज उन्होंने पूरी बात बोलकर, उन शब्दों के अर्थ अनजाने में ही सुजाता के सामने प्रकट कर दिए थे- 'घर तो साफ रहेगा ही... बांझिन का घर जो ठहरा...' *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

आत्मीय ऊष्मा से भीगे संस्मरण

कवयित्री और कथाकार आरती 'आस्था' के द्वारा लिखे गए दस संस्मरणों की किताब 'उनसे मिले जैसे जिंदगी से मिले' हाल में छपकर आई है। इनमें एक तरफ जहां उनके निजी जीवन की छवियां उजागर होती हैं, वहीं आज के संवेदनहीन होते जा रहे समय में भावनात्मक संबंधों की अत्यंत सघन अनुभूतियां, मन को आश्वस्त करती हैं कि अब भी दुनिया में बहुत कुछ सुंदर और संजोने लायक बचा हुआ है। इनमें राजेंद्र राव, ओम निश्चल, कृष्ण बिहारी, विनोद श्रीवास्तव, पंकज चतुर्वेदी और आशीष शुक्ला जैसे साहित्यकारों के सान्निध्य में अर्जित अनुभूतियों को लेखिका ने मार्मिकता के साथ शब्दों में पिरोया है। इनके अलावा कुछ ऐसे स्नेही स्वजनों के प्रति भी उन्होंने शाब्दिक कृतज्ञता अर्पित की है, जिन्होंने जीवन के कठिन समय में उन्हें संबल दिया। शिल्पगत कृत्रिमता से मुक्त, सहज भाषा में लिखे गए ये संस्मरण मन में ठहर जाते हैं। वास्तव में ईमानदारी और सहजता ही इन संस्मरणों का सौंदर्य है, जो पारंपरिक संस्मरण विधा की बनी-बनाई परिधि से इतर इन संस्मरणों को अलग पहचान प्रदान करता है। प्रख्यात साहित्यकार यश मालवीय ने पुस्तक की भूमिका में उचित ही लिखा है, 'पृष्ठ-पृष्ठ पर जैसे यादों का लोहबान जल रहा है। आत्मीय ऊष्मा से नहा गया है मन।' *

पुस्तक: उनसे मिले जैसे जिंदगी से मिले, **लेखिका:** आरती 'आस्था', **मूल्य:** 180 रुपए, **प्रकाशक:** सर्व भाषा ट्रस्ट, दिल्ली

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार विश्वविख्यात डॉ. प्रमोद पहारिया द्वारा ग्वालियर में हो रहा है। आईये जानते हैं इस तकनीक के असाधारण लाभ-

मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश ने डॉ. प्रमोद पहारिया को प्राईड ऑफ एम.पी. अवार्ड दिया।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?

सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?

सर्जरी के दौरान पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एवं बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लांट फैलियर जैसे जो कॉम्पिलकेशन देखने को मिलते हैं, वैसा इसमें खतरा नहीं है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?

डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?

यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?

15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

एक डिस्क लेवल के ट्रीटमेंट में कितना खर्च आता है?

स्पाइन सर्जरी में जहां 3 लाख तक का खर्चा आता है वहीं यह उपचार मात्र 20000 तक में हो जाता है। विदेशों में इसका खर्च 50 गुना तक है।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?

एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?

90 से 95% सफल है। अब तक लगभग 7,500 मरीज हमेशा के लिए ठीक हो चुके हैं। यह इंजेक्शन प्रॉब्लम साइट में लगाया जाता है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?

इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?

नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक **विशेष मशीन** की निगरानी में किया जाता है।

Advt...

NBC@

डॉ. प्रमोद पहारिया

स्पाइन सर्जन

MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)

पूर्व सर्जन- सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली

देहली हॉस्पीटल, ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)

समय: दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक

व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें

सम्पर्क - 7354858466

www.nonsurgicalspinecentre.in

तीर्थयात्रा

डॉ. शिबन कृष्ण रैणा

हर वर्ष सावन माह में बाबा अमरनाथ धाम में प्राकृतिक रूप से निर्मित होने वाले हिम शिवलिंग के दर्शन के लिए देश भर से हजारों-लाखों श्रद्धालु अमरनाथ तीर्थयात्रा करते हैं। अत्यंत दुर्गम होने के बावजूद धार्मिक आस्था और पुण्य अर्जित करने की कामना से भक्तगण इस यात्रा में भरपूर उत्साह से सम्मिलित होते हैं। इस यात्रा की विशिष्टता और महत्ता के बारे में जानिए।

आध्यात्मिक आनंद-अक्षय पुण्य प्रदान करती है अमरनाथ यात्रा

भारत वर्ष तीर्थों की पवित्र भूमि है। इस धरा पर ऐसा कोई प्रांत नहीं, जहां तीर्थस्थल न हों। ये तीर्थस्थल दीर्घकाल से आस्था एवं विश्वास के प्रमुख केंद्र रहे हैं। सनातन धर्मावलंबियों के लिए कश्मीर प्रांत में स्थित अमरनाथ नामक तीर्थस्थल का विशेष महत्व है। कल्हण की 'राजतरंगिणी' में इस तीर्थ को 'अमरेश्वर' कहा गया है। अमरनाथ हिंदी के दो शब्द 'अमर' अर्थात 'अनश्वर' और 'नाथ' अर्थात 'भगवान' को जोड़कर बनता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों- सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकालेश्वर, ॐकारेश्वर, केदारनाथ, भीमाशंकर, काशी विश्वनाथ, वैद्यनाथ, त्रयंबकेश्वर, रामेश्वरम, नागेश्वर और घृष्णेश्वर के अतिरिक्त अमरनाथ का भी विशेष महत्व है। शिव के प्रमुख स्थलों में अमरनाथ अन्यतम है। इसीलिए अमरनाथ को तीर्थों का तीर्थ कहा जाता है। मृत्यु को जीतने वाले मृत्युंजय शिव अमर हैं, इसीलिए अमरेश्वर भी कहलाते हैं। श्रद्धालु अमरेश्वर को ही बाबा अमरनाथ और बर्फानी-बाबा भी कहते हैं। अमरनाथ तीर्थस्थल जम्मू-कश्मीर राज्य के श्रीनगर शहर के उत्तर-पूर्व में 141 किलोमीटर दूर समुद्र तल से 3,888 मीटर (12756 फुट) की ऊंचाई पर स्थित है। इस गुफा की लंबाई (भीतर की ओर गहराई) 19 मीटर और चौड़ाई 16 मीटर है। 40 मीटर ऊंची अमरनाथ गुफा में पानी की बूंदों के जम जाने की वजह से ठोस बर्फ का एक अप्रतिम-दैवीय शिवलिंग निर्मित होता है।

पौराणिक मान्यता: एक पौराणिक गाथा के अनुसार भगवान शिव ने पार्वती को अमरत्व का रहस्य (जीवन और मृत्यु के रहस्य) बताने के लिए इसी गुफा को चुना था। कथा के अनुसार जब देवी पार्वती ने भगवान शिव से अमरत्व के रहस्य को प्रकट करने के लिए कहा, तब यह रहस्य बताने के लिए भगवान शिव, पार्वती को हिमालय की इस गुफा में ले गए, ताकि उनका यह रहस्य कोई भी न सुन पाए और यहीं पर भगवान शिव ने देवी पार्वती को अमरत्व का रहस्य बताया था।

पौराणिक और ऐतिहासिक महत्ता: इतिहासकारों का मानना है कि अमरनाथ यात्रा, हजारों वर्षों से चली आ रही है। अमरनाथ-दर्शन का महत्व पुराणों में भी मिलता है। बृंगेश संहिता, नीलमत पुराण, कल्हण की राजतरंगिणी आदि में इस तीर्थ का उल्लेख मिलता है। नीलमत पुराण में अमरेश्वर के बारे में दिए गए उल्लेख से पता चलता है कि इस तीर्थ के बारे में छठी-सातवीं शताब्दी में भी लोगों को जानकारी थी। स्वामी विवेकानंद ने 1898 में जब अमरनाथ गुफा की यात्रा की तो भावविभोर होकर कहा था, 'मुझे सचमुच लगा कि स्वयं शिव के दर्शन हो गए हैं। मैंने ऐसी सुंदर प्रतिमा कभी नहीं देखी और न ही किसी धार्मिक-स्थल की यात्रा का इतना आनंद आया।'

यात्रा के हैं दो मार्ग: अमरनाथ की गुफा तक पहुंचने के लिए सामान्यतः दो मार्ग हैं। प्रथम पहलगाम मार्ग और दूसरा सोनमर्ग-बालतल मार्ग। पहलगाम मार्ग अपेक्षाकृत सुविधाजनक है, जबकि बालतल मार्ग हालांकि अमरनाथ की गुफा से मात्र 14 किलोमीटर की दूरी पर है, लेकिन यह मार्ग अत्यंत दुर्गम है। सामान्यतः यात्री पहलगाम मार्ग से ही अमरनाथ यात्रा करते हैं। पहलगाम से अमरनाथ की दूरी 45 किलोमीटर है। इस यात्रा मार्ग में चंदनबाड़ी, शेषनाग तथा पंचतरणी तीन प्रमुख रात्रि पड़ाव हैं। प्रथम पड़ाव चंदनबाड़ी है, जो पहलगाम से 12.8 किलोमीटर की दूरी पर है। तीर्थयात्री पहली रात यहीं पर बिताते हैं। दूसरे दिन पिस्सू घाटी की चढ़ाई प्रारंभ होती है। चंदनबाड़ी से 13 किलोमीटर दूर शेषनाग में अगला पड़ाव होता है। यह चढ़ाई अत्यंत दुर्गम है। यहीं पर पिस्सू घाटी के दर्शन होते हैं। पूरी यात्रा में पिस्सू घाटी का मार्ग बहुत कठिन है। पिस्सू घाटी समुद्र तल से 11,120 फुट की ऊंचाई पर है। इसके पश्चात यात्री शेषनाग पहुंचते हैं। लगभग डेढ़ किलोमीटर लंबाई में फैली हुई झील अत्यंत सुंदर है। तीर्थयात्री रात्रि में यहीं विश्राम करते हैं। तीसरे दिन यात्रा पुनः आरंभ होती है। इस यात्रा मार्ग में महागुणास दर्रे को पार करना पड़ता है। महागुणास से पंचतरणी का पूरा रास्ता ढलान-युक्त है। छोटी-छोटी पांच नदियों के बहने के कारण यह स्थान पंचतरणी नाम से प्रसिद्ध हुआ है। पंचतरणी से अमरनाथ की पवित्र गुफा 6 किलोमीटर की दूरी पर है। गुफा के समीप पहुंच कर पड़ाव डाल दिया जाता है तथा प्रातःकाल पूजन इत्यादि के पश्चात शिव के हिमलिंग के दर्शनोपरांत भक्तजन पुण्य लाभ के भागीदार बनते हैं।

प्राप्त होता है पुण्य लाभ: प्रतिवर्ष संपन्न होने वाली इस पुण्यदायिनी यात्रा से अनेक पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। ऐसा माना जाता है कि अमरनाथ दर्शन और पूजन से महापुण्य प्राप्त होता है। शास्त्रों में इंद्रिय निग्रह पर विशेष बल दिया गया है, जिससे मुक्ति की प्राप्ति होती है। शास्त्रों में वर्णित है कि अमरनाथ यात्रा 'निग्रह' के बिना ही मुक्ति प्रदान करने वाली है, क्योंकि यात्राक्रम में आने वाली कठिनाइयों और गंतव्य-स्थल पर पहुंच कर होने वाले अनेकविध अनुभवों के कारण तीर्थयात्री को विविध प्रकार के सांसारिक कष्टों का बोध होता है। साथ ही शिव के हिमलिंग रूप के दर्शन से उसका हृदय इतना संयमित हो जाता है कि इंद्रिय-निग्रह किए बिना ही उसे मुक्ति प्राप्त होती है। भोलेनाथ भक्तों के समस्त भव रोगों और दुःखों का समूल नाश करते हैं।

श्रद्धा-सौहार्द भरी यात्रा: श्रावण मास में पवित्र हिमलिंग के दर्शनार्थ लाखों लोग भिन्न-भिन्न प्रदेशों से यहां आते हैं। अमरनाथ यात्रा से संबंधित एक अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यावहारिक तथ्य यह है कि यह यात्रा पारस्परिक सद्भाव के प्रचार-प्रसार का कार्य भी करती है। विभिन्न प्रांतों से शिव के दर्शनार्थ आने वाले भक्तों में परस्पर समभाव की भावना विकसित होती है। विभिन्न भाषा-भाषी लोगों में परस्पर वार्तालाप होता है, भाईचारे की भावना का विकास होता है और विभिन्न प्रांतों की भौगोलिक जानकारी का आदान-प्रदान होता है। अतः अमरनाथ तीर्थयात्रा को तीर्थाटन के अतिरिक्त श्रद्धा, ज्ञान एवं सौहार्द के समुच्चय के रूप में भी जाना जाता है। *

अगर आप चाहते हैं कि लोग आपकी पर्सनालिटी से इंप्रेस हो, हर कोई आपसे जुड़ना चाहे, आपकी हेल्प करने को तैयार रहे, तो इसके लिए आपको खुद में कुछ क्वालिटीज को डेवलप करना होगा। इस बारे में जानिए।

पर्सनालिटी बनेगी मैग्नेटिक

डेवलप करें ये क्वालिटीज

सेल्फ इंप्रूवमेंट

शिखर चंद जैन

मनीष का सोशल सर्कल देखकर उसके कुछ रिश्तेदारों को बड़ी हैरानी हुई। उसकी बेटी की शादी थी तो उसकी पूरी सोसाइटी और ऑफिस के लोग उसकी मदद के लिए ऐसे तत्पर थे, मानो वह कोई बहुत बड़ी हस्ती हो। किसी को कहने भर की देर थी काम चुटकियों में हो रहा था। कुछ रिश्तेदारों को उसके इस रुतबे से बेहद खुशी हुई, तो कुछ को ईर्ष्या भी महसूस हुई। उसके चचेरे भाई ने जरूर उसकी पीठ ठोकते हुए कहा, 'भाई तूने अपनी अच्छी रेपुटेशन बना रखी है। बिल्कुल चुंबक है, चुंबक।' ऐसी चुंबकीय पर्सनालिटी का स्वामी बनना बहुत कठिन बात नहीं है। इसके लिए आपको बस कुछ छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना जरूरी है।

दूसरों को स्पेशल फील कराएं: हर व्यक्ति स्वयं को महत्वपूर्ण मानता है और चाहता है कि दूसरे भी उसे मान सम्मान दें। यह स्वभाव सामान्य से लेकर अति विशिष्ट तक हर व्यक्ति का होता है। सब चाहते हैं कि उसकी सराहना की जाए और वह ऐसे ही व्यक्ति को पसंद करते हैं, जो उन्हें ऐसा महत्व देता है। इसलिए मानव व्यवहार की इस मूलभूत इच्छा को समझें और लोगों के साथ ऐसा ही आचरण करें। जाहिर है, वे भी आपके साथ ऐसा ही व्यवहार करेंगे।

सोशल नेटवर्क बढ़ाएं: हमारे जीवन में सामाजिक संबंधों का होना बेहद जरूरी है। ये प्रोफेशनल ही नहीं, पर्सनल लाइफ में भी बहुत सपोर्ट करते हैं। लोगों से मेल-जोल बढ़ाएं। उनके साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करें। महत्वपूर्ण अवसरों पर उन्हें निमंत्रण और उपहार दें। किसी के निमंत्रण पर वहां जरूर जाएं। अगर कोई मुसीबत में है और उसे आपकी जरूरत है तो उसकी यथासंभव मदद करें। आपका मृदु व्यवहार और मिलनसार स्वभाव न सिर्फ आपका सामाजिक दायरा बढ़ाता है, यह आपको उन ऊंचाइयों तक पहुंचने में मदद कर सकता है, जिनकी आप कामना करते हैं।

आभार और बधाई देना सीखें: सहयोग या मदद के बदले आभार प्रकट करने वाले और किसी की उपलब्धि पर बधाई और शुभकामनाएं देने में आगे रहने वाले लोगों को हर कोई पसंद करता है। लेकिन ज्यादातर लोग ऐसा नहीं कर पाते। आप अगर इन दोनों गुणों को अपना लेते हैं तो लोग आपको जरूर पसंद करेंगे, आपको इंपॉर्टेंस देंगे।

उम्मीदें ना करें: लोगों से उम्मीदें रखने से अकसर निराशा हाथ लगती है। जब आपकी उम्मीदें पूरी नहीं होतीं, तो आप उनके प्रति बुरा सोचने लगते हैं। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक ही है। फिर दूसरे भी आपसे दूर रहने लगते हैं। जीवन में व्यावहारिक बनें और सरल सोचें। अगर आपने किसी की मदद की है, तो वह आपका स्वभाव है और आपको सुविधा थी तो आपने वैसा किया। इस भाव से मदद करने और संपर्क रखने पर जादुई असर होता है। लोगों के एक बड़े समूह के बीच आप लोकप्रिय होने लगते हैं।

शब्दों का चयन सावधानी से करें: आप लोगों से अपनी बातचीत के माध्यम से जुड़ते हैं। उन्हें प्रभावित भी संवाद से ही किया जा सकता है। आप बोलते वक्त कैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, आपकी टोन कैसी है, बॉडी लैंग्वेज कैसी है आदि बातें बहुत मायने रखती हैं। दूसरों की बात गौर से सुनें, आई कॉन्टेक्ट रखें। कोई अपनी बात कह रहा है तो बीच में अपनी गाथा ना सुनाएं। अनचाही सलाह देने से बचें और तेज आवाज में बात न करें। कम्युनिकेशन स्किल जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती है, चाहे वह रिश्ते बनाना हो या कारोबार बढ़ाना हो। बेहतर कम्युनिकेशन स्किल से आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली होने लगेगा। लोग आपसे जुड़ते चले जाएंगे। *

उपयोगी पेड़

वीना गौतम

अच्छी सेहत के साथ अच्छी आमदनी भी कराए अनार

पौष्टिकता और औषधीय गुणों से भरपूर अनार का वैज्ञानिक नाम 'पुनिका ग्रैनटम' है। यह 'लिथरेसी' परिवार का पेड़ है। हाल के सालों में अनार एक महत्वपूर्ण नकदी फसल के रूप में उभर कर सामने आया है। अनार मध्यम आकार का झाड़ीनुमा वृक्ष होता है, जो आमतौर पर 6 से 8 फुट ऊंचा होता है, लेकिन व्यवस्थित तरीके से देखरेख करने पर इसके पेड़ 10 से 15 फीट तक भी ऊंचे हो सकते हैं। इसका फल गोलाकार, कठोर परत वाला होता है। इस कठोर परत के नीचे लाल रंग के रसदार दाने भरे होते हैं।

सदियों पुराना पेड़: अनार मूलतः ईरान और उत्तरी भारत का देशज पेड़ माना जाता है। भारत में अनार का पेड़ प्राचीनकाल से मौजूद रहा है। हमारे प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में भी अनार के औषधीय गुणों का उल्लेख मिलता है। प्राचीनकाल में अनार राजा-महाराजाओं के लिए ही उपलब्ध था, यह उनके भोजन और फलाहार का हिस्सा हुआ करता था।

अनार की विभिन्न किस्में: भारत में अनार की पाई जाने वाली सबसे लोकप्रिय किस्म 'भगवा' है। इस किस्म के फल बड़े और दाने चमकदार लाल रंग के होते हैं। निर्यात के लिए यह उपयुक्त किस्म मानी जाती है। भगवा के अलावा कंधारी, गणेश, अर्का मृदुला, अर्का रक्षक, ज्योति, रूबी नाम की किस्में पाई जाती हैं। हर किस्म की कुछ न कुछ खासियत होती है।

भारत में खेती: पहले अनार का पेड़ आमतौर पर हिमालयी क्षेत्रों और दक्कन के पठार में ही पाया जाता था। मगर आजकल देश के ज्यादातर हिस्सों में इसकी अलग-अलग किस्में उगाई जाती हैं। भारत में व्यावसायिक दृष्टि से अनार का सर्वाधिक उत्पादन महाराष्ट्र में होता है। महाराष्ट्र के बाद कर्नाटक, गुजरात, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, राजस्थान, मध्य प्रदेश और पंजाब के कई क्षेत्रों में भी अनार की खेती की जाती है। अनार की खेती के लिए उपयुक्त दशाओं की बात करें तो इसके लिए लिए कम वर्षा, हल्की दोमट मिट्टी और 5.5 से 7.5 पीएच की भूमि सबसे उपयुक्त होती है।

किसानों के लिए फायदेमंद: एक एकड़ जमीन में करीब 400 से 500 अनार के पेड़ लग जाते हैं और हर पेड़ से कम से कम 10 से 12 किलो अनार का उत्पादन होता है। प्रति एकड़ 4000 से 6000 किलोग्राम तक अनार का उत्पादन हो सकता है। इसमें 60 हजार से 1 लाख रुपए के बीच लागत आती है। अगर इसका बाजार भाव 80 रुपए भी मिल जाए तो किसान को हर साल 3 से 4 लाख रुपए की आमदनी हो सकती है। *

टेक्नो-बिहेवियर

मेघा राठी

लगभग सभी सोशल मीडिया यूजर्स इमोजी का यूज करते ही हैं। लेकिन इसका यूज करते समय कुछ एटिकेट्स का ध्यान रखना जरूरी है। इमोजी डे (17 जुलाई) के अवसर पर जानिए इनके बारे में।

जब यूज करें इमोजी ना भूलें एटिकेट्स

इन दिनों सोशल मीडिया पर चैटिंग करने के दौरान या मैसेज भेजते समय इमोजी का यूज करना एक ट्रेंड बन गया है। लेकिन इमोजी भेजते समय लापरवाही बरतना आपकी इमेज बिगाड़ सकता है, आपको नॉनसिरीयस साबित कर सकता है। इसलिए जरूरी है कि शब्दों की तरह ही इमोजी का भी यूज सोच-समझकर करें।

डिजिटल युग में कम्युनिकेशन: वर्तमान डिजिटल युग में संवाद का स्वरूप तेजी से बदला है। सोशल मीडिया पर लेख, पोस्ट, सूचनाएं या अनुभव कुछ भी पढ़कर शीघ्रता से प्रतिक्रिया के रूप में 'लाइक', 'डिसलाइक' या किसी अन्य प्रतीक के रूप में इमोजी भेज दिया जाता है। इनमें सबसे अधिक प्रयोग होने वाला चिन्ह है- दिल। यह प्रतीक जो मूलतः प्रेम, आत्मीयता या गहरे भावनात्मक जुड़ाव का प्रतिनिधित्व करता है लेकिन अब रिएक्शन का सबसे सरल प्रतीक बन गया है। चाहे विषय गंभीर हो, आध्यात्मिक हो, संघर्षपूर्ण जीवन अनुभव हो या सामाजिक समस्या-सब पर एक समान प्रतिक्रिया के रूप में यह चिन्ह लगा दिया जाता है।

प्रतीकों का भी होता है संदर्भ: वास्तव में, 'दिल' तब उपयुक्त प्रतीक होता है, जब विषय आत्मीय हो- जैसे मित्रता, स्नेह, समर्थन या व्यक्तिगत अनुभवों में सहानुभूति। लेकिन जब विषय दार्शनिक, वैचारिक या तर्कसंगत हो या जब वह शोक, पीड़ा या सामाजिक असमानता से जुड़ा हो, तब ऐसे प्रतीकों से प्रतिक्रिया देना विषय की गंभीरता को हल्का बना देता है। यह न केवल लेखक के प्रति असंवेदनशीलता को दर्शाता है, बल्कि भेजने वाले की समझ पर भी प्रश्न उठाता है।

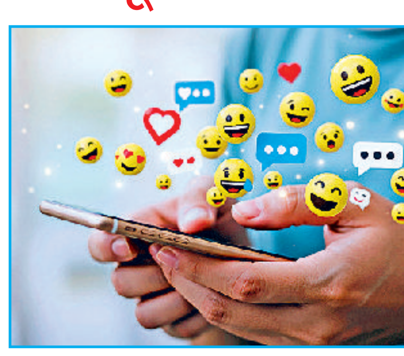

हर जगह इमोजी भेजना उचित नहीं: इमोजी भेजने की प्रवृत्ति सिर्फ सोशल मीडिया तक सीमित नहीं रही, अब लोग आधिकारिक ईमेल, विभागीय संदेश या वरिष्ठों को भेजे जाने वाले संवादों में भी इमोजी का प्रयोग करने लगे हैं। यह न केवल संवाद की गंभीरता को कम करता है, बल्कि कई बार यह आपकी अनुशासनहीनता या असंवेदनशीलता का संकेत भी माना जा सकता है। इसलिए ऐसा करने से बचना चाहिए। इमोजी का प्रयोग मित्रता, निजी वार्तालाप में उपयुक्त है, लेकिन इसकी सीमाएं स्पष्ट होनी चाहिए। डिजिटल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ विवेक भी आवश्यक है।

कुछ कॉमन इमोजी

- ❤️ स्नेह, मित्रता, सहानुभूति, प्रेरणा।
- 😂 हंसी मजाक, मीम, हल्के-फुल्के निजी संवाद।
- 😢 संवेदना, शोक व्यक्त करने के लिए।
- 🙏 धन्यवाद, सम्मान, श्रद्धांजलि, प्रार्थना।
- 🔥 प्रेरक कार्य, जोश, उपलब्धि की सराहना।
- 👏 किसी की उपलब्धि, प्रेरक विचार का समर्थन।
- 😍 रोमांटिक या सौंदर्य-प्रशंसा से जुड़े।
- 🤔 तर्क, प्रश्न, विचार-उत्तेजक विषय।

डिजिटल एटिकेट का रखें ध्यान: किसी भी इमोजी को सेलेक्ट करने से पहले कुछ बातों का ध्यान रखें।

- सोच-समझकर इमोजी का चयन करें।
- कार्यालय या वरिष्ठों के साथ संवाद में औपचारिक भाषा अपनाएं।
- गंभीर विषयों पर केवल इमोजी के बजाय मौलिक प्रतिक्रिया दें।
- यदि इमोजी भेजना हो तो विषय के अनुकूल ही सेलेक्ट करें। प्रतीकों का प्रयोग प्रासंगिकता के साथ होना चाहिए, न कि केवल आदत या सुविधा के कारण। *

सिने-जगत / अशोक जोशी

हाल में ही एक्ट्रेस-मॉडल शेफाली जरीवाला की अचानक हुई डेथ ने सबको चौंका दिया। लेकिन शेफाली से पहले भी हिंदी सिनेमा और छोटे पर्दे के कई एक्टर-एक्ट्रेसेस बहुत कम उम्र में ही दुनिया को अलविदा कह गए हैं। ऐसे ही कुछ कलाकारों पर एक नजर, जो युवावस्था में ही इस जहान से रुखसत हो गए।

सितारे जिन्होंने कम उम्र में ही

दुनिया को कह दिया अलविदा

हम जो पर्दे पर देखते हैं, वो सितारों की रील लाइफ होती है। जो जिंदगी वह वास्तव में जीते हैं, वह उनकी रियल लाइफ होती है। पर्दे पर हमें जीवंत, सुखी, स्वस्थ और ढाई घंटे में बरसों लंबी जिंदगी के दर्शन करा देने वाले कुछ सितारे ऐसे भी हैं, जिनकी जिंदगी किसी शॉर्ट फिल्म जितनी ही छोटी रही।

कम उम्र में गुजरे बीते दौर के सितारे: पिछली सदी में पचास का दशक हिंदी फिल्मों का आरंभिक दौर था। उस दौर में अभिनेता श्याम एक जाने माने सितारे थे, जिनकी एक फिल्म की शूटिंग के दौरान घोड़े से गिरने से मौत हो गई थी। जिस समय यह हादसा हुआ, उनकी उम्र केवल 31 बरस ही थी। के.एल. सहगल हिंदी फिल्म के मशहूर गायक और अभिनेता थे। लेकिन शराब की लत के कारण उन्हें लीवर सिरोसिस हो गया था। मात्र साढ़े बयालिस साल की उम्र में सहगल इस दुनिया से विदा हो गए।

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री को 'प्यासा', 'कागज के फूल', 'साहेब बीवी और गुलाम' जैसी क्लासिक फिल्में देने वाले गुरुदत्त महज 39 वर्ष की उम्र में दुनिया छोड़ गए थे। गुरुदत्त को इन्सोम्निया (स्लीप डिसऑर्डर) की बीमारी थी। कहा जाता है कि शराब के अत्यधिक सेवन और नींद की गोली के ओवरडोज के कारण उनकी मृत्यु हो गई थी।

शेफाली जरीवाला

सुशांत सिंह राजपूत

गुरु दत्त

मीना कुमारी

हाल में गुजर गए युवा सितारे: बीते कुछ दशकों की बात करें तो फिल्म और टेलीविजन के कई प्रसिद्ध कलाकार बेहद कम उम्र में ही जिंदगी की जंग हार गए। सुशांत सिंह राजपूत ने सिर्फ 34 साल की उम्र में कथित आत्महत्या कर ली। हालांकि सुशांत की मौत की वजहों को लेकर आज भी कई तरह की अटकलें लगाई जाती हैं। बिग बॉस 13 के विनर और टीवी के मशहूर अभिनेता सिद्धार्थ शुक्ला की हार्ट अटैक के कारण हुई अचानक मृत्यु ने सभी को स्तब्ध कर दिया था। सिद्धार्थ सिर्फ 40 साल की उम्र में इस दुनिया से रुखसत हो गए। अभिनेता इंदर कुमार महज 44 साल की उम्र में दुनिया छोड़ कर चले गए। उनके निधन की भी वजह हार्ट अटैक को ही माना गया था। हालांकि अपने निधन से कुछ साल पहले इंदर कुमार एक फिल्म की शूटिंग के दौरान हेलिकॉप्टर से जमीन पर गिर गए थे और तभी से उनको कई परेशानियां शुरू हो गई थीं।

कई अभिनेत्रियां भी गुजर गईं कम उम्र में: हिंदी सिनेमा की वीनस कही जाने वाली मोहक व्यक्तित्व की मलिका मधुबाला की मुस्कान आज भी दर्शकों के मस्तिष्क पर छाई हुई है। फिल्मी करियर के साथ ही उनका जीवन भी छोटा ही रहा। उन्होंने 36 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह दिया था। उनकी मृत्यु का कारण दिल की बीमारी बताया जाता है। इसी तरह ट्रेजडी क्वीन मीना कुमारी की रियल लाइफ भी किसी ट्रेजडी से कम नहीं थी। पारिवारिक विवाद और दुःख से परेशान मीना कुमारी ने शराब से नाता जोड़ लिया था। अपने गम में डूबी मीना कुमारी 38 वर्ष की उम्र में इस दुनिया से कूच कर गईं। अपने जमाने की सफलतम नायिकाओं में से एक गीताबाली भी चेचक की बीमारी के कारण मात्र 34 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह गईं। प्रतिभाशाली अभिनेत्री स्मिता पाटिल जब सिनेमा में आईं तो लगा था कि मीना कुमारी की खाली जगह भर जाएगी। अपने छोटे से फिल्मी जीवन में स्मिता पाटिल ने न केवल समानांतर फिल्मों में अपनी जगह बनाई बल्कि अमिताभ बच्चन के साथ 'नमक हलाल' जैसी सुपरहिट कॉमर्शियल फिल्म की सफलता में बराबर का योगदान दिया। लेकिन दुर्भाग्यवश डिलीवरी के दौरान पीलिया से पीड़ित होकर वह मात्र 29 साल की उम्र में स्वर्ग सिधार गईं। बाद के दौर की बात करें तो उभरती नायिका दिव्या भारती को भी बेहद कम उम्र में मौत ने अपनी आगोश में ले लिया था। सफलता के सिंहासन पर बैठी यह नायिका मात्र 19 साल की उम्र में एक हादसे का शिकार हो चल बसीं।

स्मिता पाटिल

प्रत्युषा बनर्जी

हाल में दिवंगत हुईं एक्ट्रेसेस: बॉलीवुड की कुछ फिल्मों में नजर आईं एक्ट्रेस जिया खान भी 25 की उम्र में दुनिया को छोड़ गईं। जिया ने खुदकुशी कर ली थी। धारावाहिक 'बालिका वधु' से अपनी पहचान बनाने वालीं प्रत्युषा बनर्जी ने भी जिंदगी से हार मान कर मौत को गले लगा लिया। प्रत्युषा ने महज 24 साल की उम्र में आत्महत्या कर ली थी। ऐसे ही कई सफल एवं उभरती हुई अभिनेत्रियों की मृत्यु बेहद कम उम्र में हुई। अगर एकदम हाल की घटना का जिक्र करें, तो 'कांटा लगा गर्ल' के नाम से मशहूर मॉडल-एक्ट्रेस शेफाली जरीवाला हाल ही में 42 वर्ष की उम्र में अचानक दुनिया को अलविदा कह गईं। *